आत्मिक साधन

अप्रैल 2009

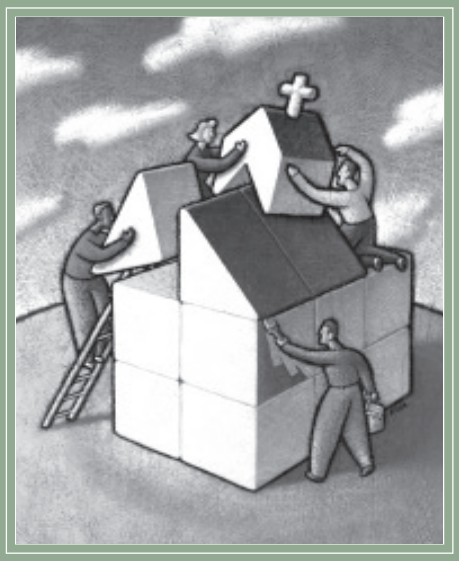

Life Publishers International

वि ष य - सू ची

1. **ज़रूरतमन्द पड़ौसी से प्रेम करना** 3
   लेखकः ए. शेरमैन
   यहाँ उन छः आशीषों का वर्णन है जिन्हें हम लोगों की ज़रूरत में सहायता करने हेतू शामिल होते समय पाते हैं।

2. **विश्वास के स्वस्थ समाज का निर्माण करने के द्वारा विसंगति को कम करना** 7
   लेखकः गैरी आर ऐलन
   विश्वासपूर्ण समाज एक ऐसा बुनियादी वातावरण है जिसमें परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य अपने परिवर्तित जीवन के लक्षणों को प्रगट करे।

3. **बुरी आदतों से संघर्ष कर रहे लोगों की सहायता करना** 13
   लेखकः लैरी
   गढ़, शरीर के काम हैं और पासबान को इसका मज़बूती से सामना करना चाहिए।

4. **चरित्रः परमेश्वर के वरदानों का फायदा उठाना** 17
   लेखकः क्लाइड डब्ल्यू. हार्वे
   किस प्रकार से एक पासबान चारित्रिक गुणों के अभाव में छुपे कुशलताओं के संसार को खोल सकता है।

5. **अपनी कलीसिया से कैसे प्रेम करें** 19
   लेखकः नील बी. वाइज़मेन
   पासबानी का अर्थ लोगों की सेवा करना है, परन्तु उन लोगों का क्या जो प्रेम करने योग्य नहीं हैं यहाँ कुछ ऐसे व्यावहारिक तरीके हैं जिसके द्वारा आप अपनी कलीसिया को प्रेम कर सकते हैं।

6. **डी. एल. मूडी व १९वीं शदाब्दी में प्रचारीय महासभाएं** 25
   लेखकः विलियम
   मूडी के पास धार्मिक ज्ञान था, परन्तु उन्होंने इसे सहज बनाये रखा, उन्होंने इस ज्ञान को तीन बातों में समेट दिया, पाप के कारण नाश हुए, लहू के द्वारा छुड़ाये गये, तथा पवित्र आत्मा के द्वारा पुनःस्थापित हुए।

7. **मज़बूती के द्वारा समाप्त** 29
   लेखकः जोर्ज ओ. वुड

ऐलिक्जैन्डर व्हाइट, एक स्वर्गीय स्कॉटिश प्रचारक को, अपनी मण्डली के लिए प्रत्येक रविवार को प्रार्थना करते समय धन्यवाद देने के लिए हमेशा कुछ न कुछ ज़रूर मिल जाता था।

एक बार रविवार को, दिन का आरम्भ बड़ी भयंकर हवाओं, कड़क ठण्ड तथा बारिश भरे तूफान के साथ हुआ। दो डीकन कलीसिया का दरवाज़ा खोलने के लिए कुछ समय पहले चले गये, जिसमें से एक ने इस प्रकार कहा, "मैं नहीं सोचता कि डॉ. व्हाइट के पास इस प्रकार के दिन में धन्यवाद देने के लिए कुछ होगा।"

जब डॉ. व्हाइट आये तो उन्होंने अपनी प्रार्थना कुछ इस तरह की, "प्रभु हम आपका धन्यवाद देते हैं कि ऐसा मौसम हमेशा नहीं रहता। जिससे वे जन आश्चर्य चकित रह गये।"

(आपके हृदय में एक गीत, लेखक, जोर्ज ओ. वुड)

लाईफ पब्लीशर्स इन्टरनैशनल

© Copyright Life Publishers 2009

लाईफ पब्लीशर्स, स्प्रींगफील्ड, मिसोरी, यूएसए, द्वारा प्रकाशित

सर्वाधिकार आरक्षित।

अब आप ऑनलाइन 'आत्मिक साधन' को १२ भाषाओं में प्राप्त कर सकते हैं। 'आत्मिक साधन' की वैबसाइट तक पहुँचकर उचित झण्डे को दबाएं। आप अपनी मनचाही भाषा का चुनाव १२ भाषाओं में से कर सकते हैंः तमिल, बंगाली, मलयालम, हिन्दी, फ्रैंच, रूसी, रोमानिया, हग्रेन, क्रोटिएन, जर्मन, स्पैनिश, या यूक्रेन।

आप 'आत्मिक साधन' को ऑनलाइन पर पढ़ने का अवसर पा सकते हैं या आप अपनी सुविधानुसार फाइलों को डाऊनलोड भी कर सकते हैं। आप निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं: http://www.enrichmentjournal.ag.org

किसी प्रश्न के जवाब या अतिरिक्त जानकारी के लिए सम्पर्क करेः
EnrichmentJournal@lifePublishers.org.

ज़रूरतमन्द पड़ोसी से प्रेम करना

एमी. एल. शेरमैन द्वारा लिखित

परमेश्वर कंगालों और कष्ट में पड़े हुए लोगों के प्रति चाहत रखता है। और वह चाहता है कि उसकी कलीसिया इस चाहत को पकड़ सके। ४०० से ज़्यादा वचन इस बात को स्पष्ट करते हैं। यिर्मयाह २२:१६ कहता है कि परमेश्वर को जानने का अर्थ गरीबों का न्याय चुकाना है। याकूब १:२७ दिखाता है कि विधवाओं और अनाथों की सुधि लेना ही 'सच्चा धर्म' है। पहला यूहन्ना ३:१७ कहता है, यदि किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है नीतिवचन १४:३१, सिखाता है जो 'कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है। और मत्ती २५:४४-४६ हमें चेतावनी देता है कि यदि हम परमेश्वर के राज्य के छोटे से छोटे की देखभाल नहीं करते, यदि हम भूखे, नंगे व गरीब को अनदेखा करते हैं तो हम खुद मसीह को अनदेखा करने के दोषी ठहरेंगे।

हमें और अधिक प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है, परन्तु मसीहीयत के अन्दर यह अद्भुत बात है कि परमेश्वर हमें अतिरिक्त प्रेरणा प्रदान करना हैः जब हम प्रेम के तहत अपने पड़ोसी की भलाई चाहते हैं, तब हम खुद भी धनी बन जाते हैं। परमेश्वर हमें हमारी आज्ञाकारिता के बदले अविश्वसनीय आशीषों को देने की प्रतिज्ञा करता है।

अधिकतर कलीसियाएं घटिया परोपकारिता की दोषी पायी जाती हैं जिसके अनुसार वह गरीबों की सहायता तो करती हैं परन्तु उन्हें जानने की इच्छुक नहीं होतीं। बहुत सी बार हम भले सामरी के उदाहरण से बहक गये हैं, जिसने यरीहों के मार्ग पर उस अनजान व्यक्ति की सहायता करने में विलम्ब नहीं किया। जब उसने उस अनजान के हाथों पर पट्टी बाँधी तो स्वयं उसके हाथ भी गन्दे हुए। सच्ची दया वह है जो नाइसा के एक चर्च फादर ग्रीगोरी ने सदियों पहले सिखायी थी कि, 'दूसरे के दुःखों में स्वेच्छा से सहभागी हो जाना ही' सच्ची दया है।

हम छः वरदानों को लिख सकते हैं, परन्तु यह आशीषें हम तक केवल तब ही पहुंचती है जब हम ज़रूरतमन्द लोगों की सहायता करने में शामिल होते हैं। यदि हमारा सम्बन्ध गरीबों से ठण्डा, दूरस्थ या निष्फल है तो यह वरदान हमें अपने आप प्राप्त नहीं होंगे। यह सम्पन्नता एक सम्बन्ध व परोपकारी सेवकाई के आधार पर प्राप्त होती है।

उत्तेजना का वरदान

जैसे जौन बाइवर ने अवलोकन किया, कि नया नियम स्पष्ट करता है कि कलीसिया की सही तस्वीर, एक बेकरार दुल्हन की तस्वीर है, जो दीवट पर खड़े होकर अपने दूल्हे का इन्तज़ार कर रही है। एक ऐसी दुल्हन जो अपने दूल्हे की अनुपस्थिति में बेचैन व बेकरार है। वह दुल्हन उन बातों को जानती - व तीव्र रूप से परमेश्वर के राज्य की 'अभी तक नहीं हुई' बातों के लिए बेचैन है। दुल्हन अर्थात कलीसिया को पुकारने वाला होना है, मारानाथा, मारानाथा। हे यीशु आ! यही वह कार्य था जो प्रथम शताब्दी की कलीसिया ने किया। हम मसीह के पुनः आगमन के लिए और अधिक बेताब क्यों नहीं होते?

यह इसलिए है क्योंकि हम अपने आप में सन्तुष्ट हैं? बहुतायत व अमीरी ने हमें मदहोश कर दिया है। इस संसार के साथ आराम में बढ़ना सहज है- यह संसार जिसे हमें सिर्फ एक तीर्थ स्थान के जैसे देखना है, अपने असली घर के जैसे नहीं।

परन्तु जब हम अपने ज़रूरतमन्द पड़ोसी के टूटेपन व दर्द से छुए जाने के लिए तैयार होते हैं तब हमारे भीतर आह व बेचैनी का एहसास बढ़ने लगेगा। जब हम पीड़ित लोगों के साथ अपने जीवन को लगा देते हैं, तब चीज़ों की स्थितियों को देखकर उत्तेजना हो जाती है। भेदभाव नहीं

होना चाहिए। गरीबी नहीं होनी चाहिए। बाल शोषण नहीं होना चाहिए। भूख और तंगी नहीं होनी चाहिए। हम उत्तेजना के अभाव के कारण आत्मिक तौर पर निर्बल हो गये हैं। हमें पवित्र बेचैनी व असन्तुष्टि की आवश्यकता है, और उसे हम अपने पड़ोसियों के कष्टों में शामिल होने के द्वारा प्रगट कर सकते हैं।

विनम्रता तथा परमेश्वर में बढ़ने का वरदान

जब हम गरीबों, चोटिल, कष्टों से संघर्ष कर रहे लोगों से दोस्ती कर लेते हैं तो हम आसानी से उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को जान जाते हैं। हम पहचान जाते हैं कि व्यक्तिगत रूप में हम उनकी सारी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकते, इसलिए बेताबी से चाहते हैं कि परमेश्वर इस काम में हमारी सहायता करे। अपर्याप्तता की पहचान, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए बड़ा उपहास है, जो घमण्डी- व खुद पर अधिक भरोसा करते हैं। परमेश्वर ने हमसे कह दिया कि 'जब हम कमज़ोर होते हैं तो मसीह की सामर्थ्य हममें सिद्ध होती है'।

घबराहट का एहसास सच्ची विनम्रता को उत्पन्न करता है। हमारे पास में जरूरत मन्दों को देने के लिए जो साधन हैं उन पर अपना भरोसा लगाने के बजाय हम, अपने लिए यीशु की ज़रूरत के बारे में सोचने लगते हैं। मरकुस २ में पाये जाने वाले झोले के मारे व्यक्ति के चार मित्रों ने अपने मित्र की ओर देखकर यह नहीं सोचा, हम इसे ठीक कर सकते हैं। नहीं। वे घबरा गये और केवल एक बात उनके मन में आयी, कि हम अपने मित्र को यीशु के पास ले चलें। यह सदैव बेहतर है कि हम अपनी सीमाओं को ध्यान में रखें, ताकि हम पूर्ण रीति से परमेश्वर पर निर्भर हो जायें जो असीमित है।

सच्चे विश्वास के बारे में जानने का वरदान

हम लोग जिनके पास सहायक नेटवर्क, जे.आर.ए. बचत खाते तथा शैक्षिक योग्यताएं हैं, सुरक्षित दायरा है। बहुत से तरीकों से हम खुद पर निर्भर हो सकते हैं। अधिक दुखद परिस्थिती वाले लोग जब प्रार्थना करते हैं, 'हे परमेश्वर, मेरी रोज़ की रोटी आज मुझे दे', तो उनके निर्भर होने में एक सच्चाई पायी जाती है। वहाँ एक भाव छुपा होता है 'परमेश्वर मुझे बचाने नहीं आया तो मैं डूब जाऊँगा।'

गरीब विश्वासियों का परमेश्वर पर इस तरह निर्भर होना, हमारी साक्षी व शिक्षा के लिए अच्छा है। 'हे मेरे प्रिय भाइयों, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना, कि वह विश्वास में धनी व उस राज्य के अधिकारी हों?' (याकूब २:५) कुछ मसीही जो आर्थिक रूप में गरीब हैं, उनके पास विश्वास का महान वरदान है। जिनके परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को तुरन्त पहचाना जा सकता है तथा, जिससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

सुगंध होने का वरदान

कलीसिया की दयापूर्ण सेवकाई, सरकार तथा अन्य असाम्प्रदायिक संगठनों द्वारा संचालित धमार्थ सेवाओं से अलग है। कलीसिया द्वारा परोपकारी कार्य, परमेश्वर की कृपा से भरे होने चाहिए जैसा कि १८०० वीं सदी के एक प्रचारक बिवरले कैराडाइन ने परिभाषित किया। जिस प्रकार की भलाई परमेश्वर हमसे चाहता है वह संसार द्वारा प्रदान भलाई से कहीं अधिक फरक है, जो वास्तव में खाली शिष्टाचार होता है।

एक सच्ची व सामर्थी भलाई या सहानुभूति स्वर्ग से आती है। मसीहियों को दयापूर्ण सेवकाई प्रगट करनी चाहिए, जिसके द्वारा तुरन्त पहचान लिया जाता है कि यह भाव किसी मनुष्य के हृदय से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा बोया गया है।

हमारी तरफ से की हुई सेवकाई, तब परमेश्वर के प्रेम व सच्चाई के निमित्त सदृश साक्षी बन जाती है जब इन सेवकाइयों के अन्दर लोगों के प्रति परमेश्वर जैसी दृष्टि, भावनाएं व सुगन्ध होती है। यह तब होता है

हम छः वरदानों को लिख सकते हैं, परन्तु यह आशीषें हम तक केवल तब ही पहुँचती हैं जब हम जरूरतमन्द लोगों की सहायता करने में शामिल होते हैं।

जब हम यीशु के समान, जो जीवन की रोटी था- सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सेवा निभाते हैं। एक घटिया और आसान परोपकारिता, जिसमें जीवन की रोटी की सुगन्ध का अभाव हो, उस पर गैर-मसीहियों का ध्यान जल्दी नहीं जाएगा। हमारी सेवा इस प्रकार के स्वभाव की हो, कि जब संसार उसकी ओर देखे तो वह उसके लिए लालायित हो, और लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो।

वह वरदान जिसे 'बारी का वरदान' कहा जा सकता है

यशायाह ५८:१०,११ में स्वयं परमेश्वर ने हमसे बारी के वरदान की प्रतिज्ञा की है (यदि तू उदारता से भूखे की सहायता करे और दीन

दुःखियों को सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा। यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा और अकाल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।)

पद (१०) में अनुवाद किया गया शब्द 'सन्तुष्ट करना' मुहैय्या कराने या उण्डेलने को दर्शाता है। किंग जेम्स वर्शन के अनुसार यह शब्द दूसरों के लिए अपने हृदय को 'उण्डेल देने' के बारे में कहता है। जब हम यहाँ पर जल के बारे में बात करते हैं तो वह दूसरा मतलब प्रकट करता है। हम पानी उण्डेलने या कुँए से पानी निकालने की बात करते हैं। हमसे अपने आपको उण्डेलने, अर्थात अपने प्राणों को उण्डेलने के लिए कहा जा सकता है। हमारे भीतर यह 'मूल जल' है - हमारा समय, हमारा हृदय, हमारा प्राण - हमें इस जल को दूसरों की आपूर्ति करने के लिए उण्डेलना है। जब हम खुद को बाहर उण्डेलते हैं तो हम खाली नहीं होतेः वरन परमेश्वर स्वयं अपने आपको व अपने प्रयोजन को हम में डाल देता है।

क्या हम भयभीत हैं कि स्वयं को अधिक उण्डेलने के कारण मैं खाली या सूखा हो जाऊँगा? शायद यही भय १ राजा १७ में प्राप्त सापरत की विधवा के दिल में भी उठा होगा। सारे राष्ट्र में अकाल और मरी पड़ी थी। परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा कि वह सापरत नामक स्थान में जाये और वहाँ उसे एक कंगाल विधवा मिलेगी। उसे उसके पास जाकर खाने व पीने के लिए कुछ माँगना था। एलिय्याह उस स्त्री से नगर के द्वार पर मिला और पानी व रोटी माँगी। उस स्त्री ने उत्तर दिया कि उसके पास थोड़ा सा तेल व मुट्ठी भर आटा है। उसने एलिय्याह से कहा कि वह मरने से पहले आखिरी भोजन पकाने के लिए लकड़ियाँ ढूंढ़ रही थी। अविश्वसनीय तौर पर एलिय्याह ने फिर भी सबसे पहले उसके लिए भोजन लाने को कहा। उसने उस स्त्री से यह वायदा किया कि यदि वह अपना सब कुछ अर्पित कर दे, तो परमेश्वर उसके व उसके बेटे के लिए प्रयोजन करने में विश्वासयोग्य रहेगा। विश्वास के साथ उसने परमेश्वर के दास, भविष्यद्वक्ता को अपने भोजन के आखिरी निवाले को भी दे दिया। परिणाम? वचन १५ कहता है, 'और परमेश्वर ने एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। न तो उस घड़े का मैदा समाप्त हुआ और न उस कुप्पी का तेल घटा।'

यह यशायाह ५८:११ का वायदा है। जब हम अपने जल को लेकर सूखे इलाके में उन लोगों के बीच उण्डेल देते हैं जो प्यासे हैं, तो हम कभी नहीं सूखेंगे। परमेश्वर खुद को और अपने प्रयोजन को हम पर उण्डेलता है ताकि हम सींची हुई बारी के समान बन जायें।

शक्तिवर्धक अराधना का वरदान

परमेश्वर के प्रति हमारा दर्शन तब बढ़ता है जब हम लोगों के बीच जाकर उन तरीकों से लोगों को परमेश्वर के बारे में बताते हैं जो हमारे लिए अपरिचित होते हैं। परमेश्वर क्या है, इस सन्दर्भ में हम नये अनुभवों को महसूस करते हैं जिन बातों हम प्रभु के कार्यों के बारे में बताते समय भूल जाते हैं परमेश्वर उसे याद दिलाता है। शक्तिवर्धक आराधना के लिए, हमें लोगों के साथ मिश्रित होने की ज़रूरत है जिनकी प्रार्थनाओं के विषय हमारे विषयों से भिन्न हैंः उदाहरण के लिए, सताव सहने की परिस्थिती, उनके साथ भेदभाव हुआ हो, किसी बुरी आदत से छुटकारा प्राप्त करने की परिस्थिती, या समाज सेवा के रूप में १६ वर्षों के बाद नौकरी का मिलना। जब हम उन लोगों के साथ संगित रखते हैं जो अपने जीवन की उन परिस्थितियों के लिए परमेश्वर से छुटकारे व प्रयोजन हेतू प्रार्थना कर रहे हैं, जिसके लिए हमने पहले कभी प्रार्थना नहीं की, और फिर हम देखते हैं कि परमेश्वर उन प्रार्थनाओं का जवाब देता है, अतः हम स्वर्गीय पिता के बहुमुखी अनुग्रह व प्रयोजन को देखते हैं जिससे हमारी उसके प्रति श्रृद्धा और गहन हो जाती है।

निष्कर्षः निरन्तर देने वाला वरदान

इस तरह से सेवा करने के द्वारा, हमें प्रार्थी के सम्मुख एक सहयोग करने या कार्यों में सहायक होने का प्रस्ताव रखने का अवसर मिल जाता है ताकि वह प्रार्थी देने वाले बने न कि सिर्फ लेने वाले। यदि हम वास्तव में अपने पड़ोसी की भलाई चाहते व उससे प्रेम करते हैं तो हम केवल उसकी जरूरतों को पूरा करने तक ही सीमित नहीं रहेंगे। हमें उसे दूसरों के लिए देने वाला बनने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, क्योंकि देने में एक आनन्द छुपा है। मसीही होने के नाते, जो सुसमाचार हम प्रचार करते हैं वह न केवल लोगों को नकारात्मक बातों से, बल्कि उन्हें सकारात्मक बातों से भी बचाता है। ■

एमी एल. शेरमन

पी.एचडी., हडसन संस्थान की वरिष्ठ सदस्य हैं जहाँ वह बहुचर्चित मनन पुस्तक, गरीबों के लिए परमेश्वर के हृदय को बाँटना, आराधना, प्रार्थना. और सेवा तथा सामुदायिक सेवकाई की बुनियादी बातेंः मण्डली हेतु पाठ्यक्रम की लेखिका हैं। (हडसन संस्थान, २००२)

विश्वास के स्वस्थ समाज का निर्माण करने के द्वारा विसंगति को कम करना

विश्वास पूर्ण स्वस्थ समाज का निर्माण करने के द्वारा कलीसिया की उलझनों व समस्याओं को कम व उनका बेहतर प्रबंध किया जा सकता है। जब साहसी अगुवे व प्रेमपूर्ण लोग, विभाजित करने वाली समस्या पर विजय पाना सीख लेंगे, तथा आपस में बातचीत करने के द्वारा उत्पादक क्षमता का भरपूर आनन्द उठाएँगे, तो वह अवश्य ही एक स्वस्थ कलीसिया बनाने का प्रयास करेंगे। अतः संघर्ष या समस्याओं का प्रबंध करना, व्यक्तिगत तथा संस्थागत रूप में, एक विशेष लक्ष्य बन जाता है जिससे किसी दुर्घटना के समय हमें काम चलाऊ कार्य करने की ज़रूरत न पड़े।

लेखक: गैरी, आर. ऐलन

कलीसिया की समस्या की गंभीरता

बहुत सी कलीसियाएं विभाजित करने वाली समस्या के कारण गतिहीन हो गई हैं जो व्यक्तिगत संबंधों को तोड़कर कलीसिया की सेवकाईयों को विकलांग कर देती हैं। इस तरह की समस्याएँ परमेश्वर के वचन के ख़िलाफ़ हैं जो कहता है, 'जहाँ तक हो सके तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो' (रोमियों १२:१८)। जबकि यदि प्रबंध ठीक ढंग से किया जाये तो, समस्या का आपसी संबंधों और कलीसिया की सेवकाई में सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

विनाशक या नकारात्मक समस्याएँ अन्य जातियों के लोगों में सुसमाचार प्रचार करने तथा उन्हें कलीसिया में लाने में एक बड़ी बाधा हो सकते हैं। एच.बी. लण्डन, बाहरी सेवा/पासबानी सेवकाई के सह-उपाध्यक्ष, जो परिवारों पर ध्यान देते हैं, का कहना है कि एक कारण जिसकी वजह से लोग कलीसिया में न आने का बहाना बनाते हैं, वह कलीसिया में होने वाले वह विवाद हैं, जिन पर उनकी नज़र जाती है। यदि कलीसिया को बेहतर ढंग से आगे बढ़ना है तो पासबान और अगुवों को समस्याओं को सुलझाने की कला को सीखना आवश्यक है।

गैर कलीसियाई लोग कलीसिया को विवादों से मुक्त होने की अपेक्षा नहीं करते। इसलिए यदि कलीसिया के किसी मुद्दे को बाइबल के उन सिद्धांतों के आधार पर सुलझाया जाए जिसका हम दावा करते हैं तो यह काम उनके लिए बेवजह नहीं है।

बहुत सी कलीसियाएं आज भी पुरानी समस्याओं में उलझी हुई हैं। वे दुविधाओं में नज़र नहीं आती परंतु उनकी सेवकाइयाँ गतिहीन हो गई हैं। समस्याएँ एक संघर्ष पूर्ण कलीसिया को या तो ख़त्म कर देती हैं या नया जीवन प्रदान करती हैं। कलीसियाओं की स्थिति गंभीर है, और इसके मिशन की ज़रूरत परिवर्तन की माँग करती है।

कलीसिया के भीतर आत्मिक व व्यक्तिगत वार्तालाप

परिवार के बाद में, विश्वासियों की संगति वह स्थान है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को अपने रूपांतरित जीवन के भावों को प्रगट करने के लिए बनाया है। विश्वासियों की संगति में ही, हम आत्मिक, मानसिक व भावनात्मक जीवन को पारस्परिक व व्यवहारिक रूप में स्थानीय संस्कृति के अनुसार जीते हैं।

प्राथमिक कलीसिया ने समाज को अति गंभीरता से लिया। लूका उनकी प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है। और सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं। वे अपनी अपनी संपत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी ज़रूरत होती थी बाँट दिया करते थे।

मसीही समुदाय की बुनियाद क्रूस है। मसीह अनेक देहों को एक देह में एकत्रित करता है। विश्वासी जन मसीह की देह के अंग हैं क्योंकि उसने उन्हें अपने कष्टों, मृत्यु तथा पुनरूत्थान के द्वारा छुड़ा लिया है। उसने (मसीह ने) उन्हें, विश्वासियों के समुदाय के रूप में रखा है इसलिए अब वे सब एक दूसरे से जुड़े हैं।

विश्वासियों का समुदाय उन्हें एक दूसरे के प्रति बाध्य करता है क्योंकि वे एक दूसरे को पसन्द करते हैं तथा उनके अनुभव भी एक समान हैं परन्तु सबसे बढ़कर बात यह है कि परमेश्वर ने उन्हें एक साथ रखा है। इस वजह से विश्वासी लोग एक दूसरे के प्रति उत्तम रूप से व्यवहार करने को बाध्य हैं, उस तरह नहीं जैसा उन्हें अच्छा लगता हो।

विश्वासियों के समुदाय के लक्षण

कलीसिया, विश्वासियों का समुदाय होने के नाते, अन्य सामाजिक संगठनों से भिन्न है। यह सम्बन्धों पर आधारित होती है। हम यीशु में परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण एक साथ हैं, और उसने हमें एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा दी है। इसलिए कलीसिया में दूसरे सामाजिक संगठनों की तुलना में, अधिक झगड़ों को पाया जा सकता है।

विश्वासियों के समुदाय की अनन्त महत्वता होती है

कलीसिया परमेश्वर की अनन्त योजना का एक सम्पूर्ण भाग है जिसमें परमेश्वर के उद्देश्य के लिए उसके लोगों को एक साथ जोड़ा गया है। पर तुम एक चुना हुआ वंश और राज-पदधारी, याजकों का समाज और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में

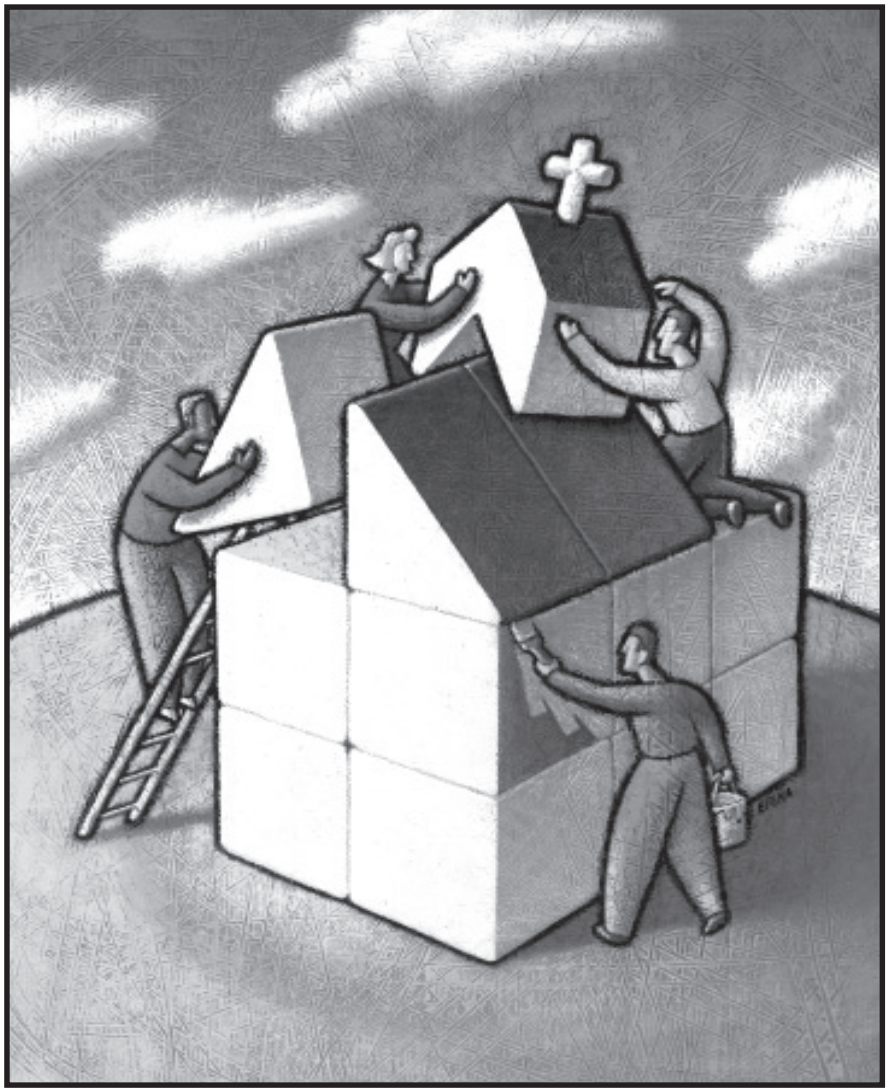

झगड़ों व उलझनों को सुलझाने की स्वस्थ्य प्रक्रिया के लिए, विश्वासियों के बीच ईमानदारी, प्रेम व पारस्परिक भरोसा ज़रूरी है।

से अपनी अदभुत ज्योती में बुलाया है कि उसके गुण प्रकट करो। (१ पतरस २:९) विश्वासियों को खास तौर पर लड़ाई-झगड़ों के समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि वह परमेश्वर के द्वारा नियुक्त समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

विश्वासियों के समुदाय का मूल आलौकिक है

केवल परमेश्वर ही कलीसिया की तरह अनोखे समाज का निर्माण कर सकता था। मसीह में आने वाले लोग, व्यक्तित्व व सांस्कृतिक रूप में इतने अलग हैं कि यदि मसीह में पायी जाने वाली सामान्यता छोड़ दें तो, उन सबके पास अलग रहने की अपनी एक अलग वजह होगी। अतः इस प्रकार की विभिन्न संस्कृति वाले समाज में झगड़ों का उत्पन्न होना सम्भव व स्वाभाविक है। फिर भी, पवित्र आत्मा की सहायता व प्रभावशाली ढंग से झगड़ों को प्रबन्ध करने के द्वारा, लोगों में एकता बनाई रखी जा सकती है।

विश्वासियों के समुदाय का अपना प्रकट भाव होता है

कलीसिया मसीह की देह की सम्पूर्ण तस्वीर है, यह किसी अदृश्य कलीसिया का छोटा सा अंश नहीं है। जहां कहीं दो या तीन लोग मसीह के नाम में इकट्ठा होते हैं उनके बीच उद्धारकर्ता व परमेश्वर उपस्थित होता है (मत्ती १८:२०)। उसकी उपस्थिति में व्यक्तिगत उत्तर दायित्व उत्पन्न होते व प्रगट किये जाते हैं।

विश्वासियों का समुदाय परमेश्वर के अनुग्रह की रखवाली करता है

एक कलीसिया भले ही अपनी अलग पहचान बना ले, परन्तु वह परमेश्वर के अनुग्रह की रखवाली करने वाली बनी रहती है। यदि परमेश्वर ज्योति और कलीसिया एक प्रिज्म (क्रकच आयत) है। तब कलीसिया ने अपनी संस्कृति व समाज में परमेश्वर के रंगों को बिखेरना चाहिए। कलीसिया का मुख्य उद्देश्य खुद को प्रदर्शित करना नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह को प्रदर्शित करना तथा उसका प्रचार करना है। पौलुस कहता है मुझ पर यह अनुग्रह हुआ है कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं (इफिसियों ३:८)।

जब मसीही लोग झगड़ों में हों, तों कलीसिया के विश्वासियों को स्मरण रखना चाहिए कि वे परमेश्वर के राज्य में उसके अनुग्रह की रखवाली करने के लिए बुलाये गये हैं। पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है (इफिसियों ४:७)।

विश्वासियों का समुदाय अपनी एकता के द्वारा वचन की सच्चाई को प्रगट करता है

विश्वासियों का व्यक्तिगत तथा कलीसिया का संस्थागत जीवन उस सुसमाचार से परिपूर्ण होना चाहिए, जिसका वह प्रचार करते हैं। विश्वासियों का एक दूसरे के लिए प्रेम, सुसमाचार का बुनियादी संदेश है। झगड़ों व उलझनों को सुलझाने की स्वस्थय प्रक्रिया के लिए, विश्वासियों के बीच ईमानदारी, प्रेम व पारस्परिक भरोसा ज़रूरी है।

यदि किसी एक को ज़रूरत पड़ती है। विश्वासियों का समाज सहायता के लिए तत्पर रहता हैः इसलिए यदि एक अंग दुख पाता है तो सब उसके साथ दुख पाते हैंः और यदि एक अंग की बड़ाई होती है तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं। विश्वासियों के समाज में उलझनों को सुलझाना प्रत्येक जन की ज़िम्मेदारी है।

विश्वासियों का समाज वह स्थान है जहां परिवर्तित जीवन जीये, व लगाये जाते हैं और जहां परिपक्वता अपना स्थान लेती हैः

परमेश्वर ने विश्वासियों के लिए कलीसिया को बनाया है। उसने उन्हें विश्वासियों के समाज में इसलिए रखा है कि वे बढ़ें व सिद्ध हों। आत्मिकता का मतलब परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध है फिर भी परमेश्वर ने यह चाहा कि उसका यह सम्बन्ध अन्य विश्वासियों में तथा उनके द्वारा बातचीत करने के द्वारा विकसित हो।

यीशु ने अपने चेलों को सारे जगत में जाकर चेले बनाने का निर्देश दिया... तथा जो कुछ मैंने

तुम्हें सिखाया है उसे उन्हें मानना सिखाओ (मत्ती २८:१९,२०) शिक्षा देना व चेला बनाना यह आपसी व व्यक्तिगत प्रक्रिया है जिसमें ज़्यादा अनुभव वाला व्यक्ति कम अनुभवों वाले व्यक्ति को सिखाता है। कलीसिया के अन्दर शिष्यता तथा आत्मिक परिपक्वता की शिक्षा के प्रबन्ध में कोई समझौता नहीं होना चाहिए।

विश्वासियों का समुदाय मसीह की उपस्थिति को देखने में सहायता करता है

विश्वासियों के समाज में सबसे विशिष्ट लक्षण, मसीह की आलौकिक उपस्थिति होती है। हमें परमेश्वर की उपस्थिति के प्रमाण अदन की वाटिका में, मरूस्थल की यात्रा के दौरान बादल और आग के खम्बे के रूप में, मन्दिर के परमपवित्र स्थान में, पिन्तेकुस्त के दिन, और सम्पूर्ण कलीसियाई काल में मिलते हैं। इसी प्रकार आज भी परमेश्वर की उपस्थिति, कलीसिया का मूल गुण होना चाहिए।

अन्यजातियों के ऊपर यीशु मसीह की पहचान का अधिक प्रभाव तब पड़ता है जब वह विश्वासियों के साथ मिलते व बातचीत करते हैं। कलीसिया में एकता में होकर बातचीत करना तथा प्रत्यक्ष रूप में समस्याओं का समाधान करने की योग्यता, मसीह की उपस्थिति प आलौकिक शक्ति को प्रकट करती है।

यद्यपि ज्यादा घनिष्ठ संगति तथा आपसी अन्दरूनी वाद-विवाद, विश्वासियों के समुदाय में अधिक संघर्ष व समस्याओं की सम्भावनाओं को उत्पन्न करते हैं, परन्तु आलौकिक विशेषताएं कलीसिया को बेहतर ढंग से समस्याओं का समाधान करने हेतु तैयार करती है।

विश्वासियों के समुदाय में एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारियां

नये नियम में अनगिनत आज्ञाओं के द्वारा समझाया गया है कि किस प्रकार से विश्वासियों को एक दूसरे के साथ व्यवहार करना चाहिए। यह आज्ञाऐं आपसी बाध्यता का निर्माण करती हैं- वह सारे विश्वासियों को अलग जिम्मेदारियों के तहत जो प्रत्येक कलीसिया के सदस्य की एक दूसरे के प्रति बनती है, उन्हें आपस में जोड़ती हैं। यह समझना कि, विश्वासीगण आपस में एक दूसरे के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं या उन्हें किस तरह एक दूसरे से व्यवहार करना चाहिए, भेदभाव को दूर करेगा और सम्भवतः विनाशकारी समस्याओं को खत्म करेगा।

यीशु ने विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा दी

शायद यीशु मसीह द्वारा दी गई सर्वाधिक विस्तृत व परिचित आज्ञा एक दूसरे को प्रेम करना है। उसने आगे कहा जैसा मैंने तुम से प्रेम किया, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो, यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो। (यूहन्ना १३:३४,३५) यीशु के द्वारा दी गयी आज्ञा मसीहियों के कर्तव्यों का आधार है और इसे नये नियम में लगभग १० बार दोहराया गया (यूहन्ना १५:१२,१७; रोमियों १३:८; १ थिस्लुनुकियों ४:९; १ पतरस १:२२; १ यूहन्ना ३:११, २३; ४:७, ११, १२; व २ यूहन्ना ५) एक दूसरे को प्रेम करना हमारा कर्तव्य तथा उलझनों व समस्याओं को दूर करने के लिए बड़ा प्रबन्धक है।

पौलुस ने यीशु की आज्ञा पर पुनः ज़ोर डाला

पौलुस ने यीशु की आज्ञा को आगे बढ़ायाः भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो (रोमियों १२:१०)। उसने यह भी कहा कि प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो (गलातियों ५:१३)। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना की कि, परमेश्वर उनके प्रेम को केवल एक दूसरे के प्रति नहीं बल्कि हर एक व्यक्ति के लिए बढ़ाये। सदा भलाई करने को तत्पर रहो, आपस में और सबसे भलाई की ही चेष्टा करो (१ थिस्सलुनीकियों ५:१५; व ३:१२)। थिस्सलुनीकियों को लिखी गई पौलुस की दूसरी पत्री में वह परमेश्वर का धन्यवाद देता है कि वहां के लोगों का पारस्परिक प्रेम बढ़ रहा है (२ थिस्सलुनीकियों १:३)।

मसीह में विश्वासी एक दूसरे से जुड़े हैं

विश्वासी मसीह में, एक देह होकर, आपस में एक दूसरे के अंग हैं (रोमियों १२:५)। हम एक देह के विभिन्न अंग हैं; इस कारण झूठ बोलना छोड़कर, हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं; (इफिसियों ४२५) तथा 'हम लोगों की आपस में सहभागिता है (१ यूहन्ना १:७)। पौलुस ने प्रार्थना की कि रोमन मसीही 'जब मसीह यीशु का अनुसरण करते हैं उनके जीवन में आत्मा की एकता पायी जाए' (रोमियों १५:५)। देह को विभाजन से बचाने के लिए, पौलुस ने विश्वासियों को निर्देश दिया कि (हर अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करे (१ कुरिन्थियों १२:२५) तथा 'एक दूसरे का अतिथि सत्कार करो (१ पतरस ४:९)।

विश्वासी एक दूसरे का आदर करते हैं

सम्पूर्ण बाइबल के अन्दर लोगों से परमेश्वर तथा आपस में एक दूसरे का आदर करने की अपेक्षा की गयी है। पौलुस कहता है 'भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे को स्नेह करो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो' (रोमियों १२:१०)। वह एक बार फिर से इस बात पर ज़ोर डालता है कि एक दूसरे का आदर करने से देह में विभाजन की समस्या कम हो जाती है।

विश्वासी विनम्रता में होकर एक दूसरे के साथ शान्ति से रहते हैं

हम यीशु के शब्दों में इसी बात को और आगे बढ़ता हुआ देखते हैं 'एक दूसरे के साथ शान्ति बनाए रखो' (मरकुस ९:५०)। पौलुस अलग तरीके से इस बात को रखता है 'एक दूसरे के साथ शान्ति में रहो' (१ थिस्सलुनीकियों ५:१३)। 'आपस में एक सा मन रखो' (रोमियों १२:१०)। विरोध या झूठी बढ़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो (फिलिप्पियों २:३)। तुम सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बांधे रहो (१ पतरस ५:५)।

विश्वासी एक दूसरे को ग्रहण करते हैं

पौलुस रोमियों १४:१३ में लिखता 'आगे को कोई एक दूसरे पर दोष न लगाये। इसलिए, जैसा मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिए तुम्हें ग्रहण किया है वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो' (रोमियों १५:७)। एक दूसरे को सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे पाप क्षमा किये, वैसे ही तुम भी करो (कुलुस्सियों ३:१३)। 'एक दूसरे पर कृपालु और करूणा मय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किये वैसे ही तुम एक दूसरे के अपराध क्षमा करो' (इफिसियों ४:३२)। 'इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो' (याकूब ५:१६)। दूसरों की व्यक्तिगत तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं को ग्रहण करने से हमें दूसरे की घनिष्ठता मिलती है, जिसके परिणाम स्वरूप आपसी मतभेदों में कमी आती है।

विश्वासी एक दूसरे की सह लेते हैं

एक दूसरे को सहन करने का अर्थ उन लोगों की परवाह करना है- जिन्हें हम पसन्द नहीं करते या जिनके साथ हमारा ताल्लुक रखना

कठिन होता है। वचन कहता है कि ढांप लो, सह लो, धीरज धरो, या ऐसे लोगों के साथ कष्ट उठा लो। इसका मतलब यह नहीं है कि अगर वे लोग गलत शब्दों या प्रतिक्रिया का प्रयोग करते हैं तो उन्हें जवाब देनी की जरूरत नहीं है। अतः हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहे, न कि अपने आप को प्रसन्न करें, हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए प्रसन्न करे कि उसकी उन्नति हो। (रोमियों १५:१,२ तुलना करें कुलु० ३:१३,१४)

विश्वासी एक दूसरे की सेवा करते हैं

एक दूसरे की मांगों को स्वीकार करना, एक दूसरे के साथ धार्मिक बातें करना। पतरस कहता है जिसको जो वरदान मिला है वह उसे दूसरों की सेवा करने में लगा दे (१ पतरस ४:१० तुलना करें गलतियों ५:१३)। यीशु मसीह ने भी ठीक यही सबक दिया जब उसने अपने चेलों से एक दूसरे के पैरों को धोने के लिए कहा (यूहन्ना १३:१४) पौलुस ने इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए कहा मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो (इफिसियों ५:२१) और एक दूसरे के बोझों को उठा लो और इस तरह से तुम मसीह की आज्ञाओं को पूरा करोगे (गलतियों ६:२)।

विश्वासी एक दूसरे को प्रोत्साहित करें

पौलुस रोम को मसीह में देखने की अभिलाषा रखता है कि वे दोनों तरफ से परस्पर एक दूसरे को विश्वास में उत्साहित करें (रोमियों १:१२)। एक दूसरे के साथ मिलकर आराधना करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि वे एक दूसरे की चिन्ता करें तथा एक दूसरे को उत्साहित करें (इब्रानियों १०:२४, २५) विश्वासियों से एक दूसरे को प्रतिदिन उत्साहित करने का निवेदन भी किया गया है (इब्रानियों ३:१३)। एक दूसरे को उत्साहित करें व उन्नति करें (१ थिस्सलुनीकियों ५:११ तुलना करें ४:१८) तुम अपने अति पवित्र विश्वास में बढ़ो (यूहन्ना २०)। जब विश्वासी लोग अपना ध्यान एक दूसरे को उत्साहित करने तथा एक दूसरे की उन्नति में लगाऐंगे तो अवश्य ही नाश, दुविधाऐं व परेशानियां खत्म हो जाऐंगी।

विश्वासी मार्गदर्शन करते तथा एक दूसरे की उन्नति करते हैं

पौलुस 'आपसी उन्नति' को चाहता था (रोमियों १४:१९)। उसने कहा, 'सिद्ध ज्ञान' सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुगृह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ (कुलुस्सियों ३:१६; तुलना करें इफिसियों ५:१९)। पौलुस रोम वासियों को लेकर पूर्ण भरोसे में था कि 'वह आपस में एक दूसरे को चिता सकते हैं' (रोमियों १५:१४)। वचन में 'एक दूसरे' वाक्य के सन्दर्भ को समझना, विश्वासियों के समुदाय में परेशानियों का प्रबन्ध करने का आधार है। विश्वासियों को आपस में एक दूसरे के नैतिक व आत्मिक बातों का ख्याल रखने में समर्पित होना चाहिए।

समस्याओं के समाधान में क्षमा की भूमिका

जब किसी समस्या के चलते-चलते काफी समय हो चुका हो, और लोगों ने इस दौरान एक दूसरे को चोट पहुंचाई हो तो, उस रिश्ते को पुनः स्थापित करने के लिए क्षमा की अति आवश्यकता है। क्षमा शब्द को निम्न रूप से परिभाषित किया गया है क्षमा, गलती सहने वाले मन व भावनाओं की एक ऐसी सक्रिय प्रक्रिया है जिसके तहत, वह व्यक्ति, उसके प्रति गलत करने वाले व्यक्ति के प्रति अपनी नफरत भरी भावनाओं का नाश करके उसके साथ आज़ादी व आनन्द के साथ दोस्ती के सम्बन्ध को स्थापित करता है।

बहुत सी बार ऐसा समय आ सकता है जब दो लोगों में झगड़ा हुआ हो और उनमें से एक क्षमा करना या रिश्तों को पुनःस्थापित करना नहीं चाहता हो, जबकि दूसरा क्षमा करने के द्वारा इस मुद्दे के इलाज की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने को तैयार हो।

यीशु और स्तिफनुस क्षमा के सन्दर्भ में हमारे लिए एक आदर्श हैं। उन्होंने अपनी मृत्यु के समय में भी अपने मारनेवालों को क्षमा किया जबकि उनके मारने वाले माफी मांगने या मेलमिलाप करने के लिए इच्छुक भी नहीं थे। (लूका २३:३४; प्रेरितों ७:५९,६०)

सम्भव है कि बहुत से लोग अपने जीवन भर किसी समस्या का सामना न करें; परन्तु विनाशकारी समस्या जीवन के अनुभवों में सर्वाधिक दर्दनाक अनुभव हो सकती है। अनेकों बार ऐसा समय हो सकता है जब झगड़ा नहीं सुलझता, अतः चोटिल व्यक्ति को पुनः उस परिस्थिति के नजदीक लाने तथा पुनः जीवन प्रारम्भ करने के लिए क्षमा की आवश्यकता पड़ सकती है। कई लोग जानबूझकर दूसरों को चोट पहुंचाते हैं और रिश्तों को सुधारने का उनका कोई इरादा नहीं होता। इन परिस्थितियों में जिन लोगों को चोट पहुंची हो, उन्हें चोट देने वालों को क्षमा करना और क्षमा करके अपने जीवन में आगे बढ़ना सीखना होगा।

क्षमा के मायने, विभिन्नताओं, फरक, झगड़ों, पुनःमेल-मिलाप जैसे शब्दों के मायने बताने से कहीं अधिक मुश्किल है। शायद क्षमा को परिभाषित करना इसलिए कठिन है क्योंकि लोग क्षमा केवल तब मांगते हैं जब वे भावनात्मक रूप से इस मामले में शामिल हों।

कई बार लोग क्षमा का इस्तेमाल झगडे को न सुलझाने के एक बहाने के रूप में करते है; जब वह दूसरे व्यक्ति का सामना नहीं करना चाहते या उनमें झगड़ा सुलझाने की योग्यता नहीं होती। वे केवल यह चाहते हैं कि झगड़ा दूर हो जाए। उनके लिए क्षमा उनका एक आत्मिक अभ्यास है जिसको करने के द्वारा वह अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते हैं। बहुत सी बार ऐसा होता है कि कुछ विशेष परिस्थितियों की वजह से चोट खाने वाला व्यक्ति, चोट पहुंचाने वाले व्यक्ति से शान्तिमय सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता, जैसे मृत्यु, और जिस का समाधान केवल क्षमा है। परन्तु यदि हो सके तो, क्षमा को केवल दोनों तरफ के लोगों को चंगाई की इस प्रक्रिया में शामिल करने के लिये ही इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

क्षमादान की प्रक्रिया में आपसी मेल मिलाप की जरूरत पड़ती है। क्षमा का मूल कार्य केवल नफरत, क्रोध, शक, क्षमा करने वाले के गुस्से से मुक्त होना ही नहीं परन्तु; यह किसी भाई या बहन को पुनः, शत प्रतिशत भाई या बहन के रूप में प्राप्त करना है। क्योंकि विश्वासियों का समुदाय, परमेश्वर का स्वरूप है इसलिये उसमें पाये जाने वाले विश्वासी आपसी व्यवहार में परमेश्वर के गुणों को प्रगट करते हैं। 'क्षमा ज़रूरी है', मेल-मिलाप वैकल्पिक है परन्तु कुछ सिद्धान्त यीशु मसीह के उदाहरण पर आधारित नहीं है। ऐसी क्षमा जो सामाजिक रिश्तों को पुनःस्थापित करने के प्रयास की बजाय स्वयं को चुप करने या झुकाने की भावना रखती है, एक सच्ची मसीही क्षमा नहीं है। क्षमा का उद्देश्य समाज की पुनःस्थापना है न कि व्यक्तिगत सिद्धता को बनाये रखना।

क्षमा की प्रक्रिया में सही समय पर कार्य किया जाना अति महत्वपूर्ण है। मेल मिलाप केवल तभी सम्भव है जब क्षमा को कार्य करने के लिये समय दिया जाए। सामना करते वक्त, मुलाकात कराते समय, यदि उचित समय नहीं दिया जाता है तो इन परिस्थितियों से मेल-मिलाप के काम में

जल्दबाज़ी होगी, और इस पुनःस्थापित सम्बन्ध में वह गुण वत्ता नहीं पायी जायेगी।

यदि किसी के साथ सम्बन्धों को पुनः स्थापित करने के लिए कोई निश्चित रणनीति उपलब्ध नहीं है तो मेल मिलाप के कार्य में इस्तेमाल की जाने वाली कोई भी तरकीब दूसरे व्यक्ति के लिए प्रेम द्वारा प्रेरित होनी चाहिए।

दुःख भरी यादों के लिए प्रार्थनापूर्ण प्रक्रिया का महत्व

कड़े शब्द व प्रतिक्रियाऐं, दर्दनात्मक व भावनात्मक यादों को रच सकते हैं जिनसे झगड़े उत्पन्न होने की सम्भावना होती है। यह दुखदायी यादें एक या दो बातें कर सकती हैंः या तो यह याद किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से लाचार कर सकती हैं या फिर यही यादें झगड़ों को सुलझाने व धीरज धरने में उसका वरदान साबित हो सकती हैं। जीवन का प्रत्येक क्षण यहां तक कि झगड़ा भी आशीष या शाप के रूप में समझा जा सकता है।

इस बात का ज्ञान कि झगड़ा सुलझ गया है या चिरस्थाई है, मुख्य तथ्यों की सच्चाई से कहीं ज़्यादा किसी की भावनाओं से पता चलता है। बहुत से लोग जिन्हें भावनात्मक रूप से चोट लगी होती है उन्हें क्षमा करने में काफी मुश्किलें आती हैं। विनाशकारी झगड़ों से उत्पन्न दर्द की चंगाई एक प्रक्रिया है। जिस प्रकार से शारीरिक घाव, भावनात्मक घाव, धीरे-धीरे ठीक होते हैं, उसी तरह दुखदायी यादों को ठीक होने में पांच स्तरों का सामना करना पड़ता हैः इनकार, गुस्सा, मोल-भाव, उदासी, तथा स्वीकार किया जाना। जैसे जैसे व्यक्ति एक स्तर से दूसरे स्तर में प्रवेश करता है, वह हर स्तर को और अधिक गहराई से भेदता हुआ निकल जाता है। भावनात्मक घावों को चंगा करने के पांच चरण, आत्मा द्वारा चंगाई प्रदान करने के स्वाभाविक तरीके को दर्शाते हैं।

परमेश्वर के द्वारा एक वरदान के रूप में क्षमादान का मूल्य

जॉन पैटन, अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ पास्टोरल काउन्सलर के भूत पूर्व अध्यक्ष तथा इन्टरनेशनल कमिटी ऑन पास्टोरल केयर एण्ड काउन्सलिंग के उपाध्यक्ष दावा करते हैं कि जब किसी को क्षमा दान का अर्थ किसी कार्य या स्वभाव की परिकल्पना के रूप में बताया जाता है तो बहुत से मसीही अपना सर्वोच्च प्रयत्न करने के बजाए, क्षमा करने में असमर्थ जान पड़ते हैं। पैटन का मानना है कि क्षमा प्रदान करना किसी मनुष्य का कार्य या स्वभाव नहीं, बल्कि यह परमेश्वर की ओर से एक वरदान है। जैसे लज्जा, तिरस्कार या निराशा के कारण उत्पन्न होती है और लोगों को आत्म-सुरक्षा निर्माण करने के लिए उत्साहित करती है, पैटन द्वारा प्रस्तुत रोग हरने वाली संगति, लज्जा की छानबीन करने का अवसर प्रदान करती है। (जैसे प्रकोप, शक्ति व धार्मिकता)। जब कोई व्यक्ति इस बात को समझ जाता है कि वह दोषी है तब वह यह मान लेगा कि वह पापियों के समाज का हिस्सा है जिसे परमेश्वर प्रेम करता है। पासबानी की सलाह की भूमिका किसी को क्षमा प्रदान करने का कार्य करना नहीं बल्कि सहज वातावरण तैयार करना है जो उस व्यक्ति की लज्जापूर्ण सुरक्षा की सीमा को तोड़ने तथा दूसरों के साथ सम्बन्ध में जुड़ने में सहायता करे।

छुटकारा देने वाली यादों का मूल्य

झूठी क्षमा समाज के नैतिक तन्तु को नाश करती है। परन्तु छुटकारा देने वाली यादें, बिना अपना भूतकाल भूले हुए आशापूर्ण तथा छुटकारा पाये हुए भविष्य पर ध्यान केन्द्रित करती हैं। क्योंकि क्षमा, धोखे के बजाए सच्चाई पर आधारित होती है इसलिए जो लोग क्षमा करते हैं वह किसी भी बात का सामना करने से नहीं डरते हैं तथा नफरत से अधिक बलवन्त आजादी द्वारा प्रेरित होते हैं। जो लोग अपनी जिन्दगी में हुई अनुचित बातों को प्रेम के तहत क्षमा करते हैं, वे एक दूसरे के प्रति आदर व समर्पण के द्वारा अगुवाई पाते हैं। इसके द्वारा हकीकत का खुलासा होता है कि कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण शुद्ध नहीं है। एक व्यक्ति इसलिए क्षमा करता है क्योंकि वह समझता है कि परमेश्वर ने खुद उसके हृदय की बुराई को क्षमा किया है। इसलिए अपने पड़ोसी को या प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा न करना परमेश्वर का इनकार करना है।

क्षमादान का अर्थ परमेश्वर व दूसरों के साथ सहभागी होना है। समझौते के रूप में क्षमा प्रदान करवाना मात्र किसी व्यक्ति का प्रयास नहीं, बल्कि मानवीय शंकाओं व झगड़ों की मध्यस्थता करना तथा परमेश्वर का चयन भी है। समझौता इसलिए होता है क्योंकि परमेश्वर को बुलाया जाता है और वह सदैव प्रतिउत्तर देने को तैयार है।

यह याद रखना कि किस प्रकार हमें चोट पहुँची तथा किस प्रकार अनेकों बार हमने दूसरों को चोट पहुँचाई, दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार में हमारी मुख्य भूमिका, मुख्य मार्गदर्शक हो सकती है।क्षमा का मतलब भविष्य में गलतियों को स्वीकार कर लेना या निरन्तर रिश्तों को तोड़ लेना नहीं है। हमसे जो अपेक्षाएं की जाती हैं, हमें उसकी सीमाएं बनानी हैं और उन सीमाओं को स्पष्ट रूप से दूसरों को बताना है। हमें दूसरों से उनके द्वारा किये गये कार्यों का हिसाब ज़रूर लेना है।

झगड़ों को सुलझाने में बपतिस्में व प्रभु भोज की भूमिका

परमेश्वर ने कलीसिया को दो ऐसी विधियां, पानी का बपतिस्मा व प्रभु भोज प्रदान की हैं जिससे हम निरन्तर परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध व मसीह की देह में एक दूसरे के साथ आपसी सम्बन्ध पर पुनर्विचार कर सकें। विश्वासियों का उनके झगड़े सुलझाने का कर्तव्य, मसीह व एक दूसरे के प्रति उनके समर्पण में छुपा है।

पानी के बपतिस्में की भूमिका

झगड़ों को सुलझाने के लिए पानी का बपतिस्मा मसीह के साथ हमारे मृत्यु, दफन, तथा पुनरुत्थान में जुड़े होने को दर्शाता है। दूसरा, पानी का बपतिस्मा, जिन लोगों ने 'हमारे समान विश्वास प्राप्त किया है' (२ पतरस १:१) उसके साथ हमारे समर्पण व जुड़े होने को प्रगट करता है। मसीह के साथ हमारे एकीकरण के सन्दर्भ में हम खुद के लिए पुराने स्वभाव के दफन होने तथा उसके साथ नये जीवन के लिए उठाये जाने की गवाही देते हैं। हमारे जीवन में उसके रूपान्तरण करने की सामर्थ्य ने हमें पाप की शक्ति से मुक्त कर दिया है। अब हम परमेश्वर के शत्रु, विरोधी, व उसकी व्यवस्था का सामना करने वाले नहीं रहे। हमारे हृदय बदल गये, और उसने हमें एकता में रहने के लिए विश्वासियों के समुदाय में रखा है।

पौलुस इस विषय पर इफिसियों और कुरिन्थियों दोनों को लिखता हैः मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही प्रभु है- एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है। 'क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं और देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो

क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया' (१ कुरिन्थियों १२:१२; १३)।

बपतिस्मा विश्वासियों को विश्वासियों के समाज से जोड़ता है। हम केवल अपने उद्धार को एक समान गवाहियाँ ही नहीं देते हैं बल्कि हम इस समुदाय के लोगों की भलाई चाहने व उनकी सहायता करने के लिए भी समर्पित हैं। इसके अन्तर्गत हमें एकता बनाये रखने के लिए अवसर व जिम्मेदारियां दोनों मिलती हैं। एक दूसरे को प्रेम करना, हमारे भेदभावों को दूर करना तथा एक दूसरे को क्षमा करना हमारा कर्तव्य है।

प्रभु भोज की भूमिका

पानी के बपतिस्मा के समान, प्रभु भोज भी झगड़ों का निवारण करने के लिए दो सहायक कदम सुझाता हैः प्रथम, प्रभु भोज हमारे उद्धारकर्ता के स्मरण में लिया जाता है, जिसने अपने शरीर का बलिदान चढ़ाकर व अपना लहू बहाकर, हमें छुटकारा दिया। जो कार्य उसने हमारे लिए किये, रोटी और प्याला उन्हीं कार्यों को दर्शाता है। जब हम प्रभु यीशु मसीह के कार्यों को स्मरण करते हैं तब हमारे भीतर नम्रता पैदा होनी चाहिए कि जब हम अपने लिए कुछ नहीं कर सकते थे, वह हमारे लिए मरा। हम यह भी स्मरण करते हैं कि विश्वासियों के समुदाय या मण्डली में प्रत्येक जन केवल उसके बदन के घायल होने व लहू बहाने के कारण उपस्थित हैं। इस कार्य के एहसास ने हमारे भीतर परमेश्वर के प्रति आदर, और अपने संगी विश्वासियों के प्रति प्रेम को उत्पन्न करना चाहिए।

दूसरा, प्रभु भोज, विश्वासियों के समाज के साथ मिलकर; परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों की गहन जाँच करने का समय है। प्रभु भोज के दौरान हम अपने बपतिस्मे के सिद्धान्तों तथा अपने समर्पण को स्मरण करते हैं। हम अपने प्रभु यीशु की याद में उसके बदन व उसके लहू को गृहण करने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। हम इसे अपने संगी विश्वासियों के साथ इसिलए बाँटते हैं कि हम उनके प्रति अपने प्रेम व समर्पण की पुनः पुष्टि कर सकें।

प्रभु भोज का मूल उद्देश्य यह है कि 'एक व्यक्ति स्वयं की जाँच करे' (१ कुरिन्थियों ११:२८)। इससे पहले कि प्रभु भोज देने की विधी के कारण विश्वासियों में कोई मतभेद हो, हमें उसकी विधी के एक तरीके को अपनाने का मन बना लेना चाहिये। यह परमेश्वर की मेज है अतः होने दें कि एक दूसरे के लिए परमेश्वर का प्रेम व हमारा प्रेम प्रत्यक्ष रूप में नज़र आये।

प्रेम शब्द, मनुष्य के भीतर उठने वाली आन्तरिक प्रक्रिया की भावना को प्रगट करता है। यदि किसी कलीसिया में अगापे प्रेम है (एक दूसरे के साथ बाँटने वाला) तो इसका अर्थ है, मजबूत, कमज़ोर, धनी, निर्धन, गरीब, बड़े व छोटे लोग एक दूसरे का ख्याल व मदद करेंगे। प्रभु भोज के समय जो विश्वासियों की संगति उत्पन्न होती है वह परमेश्वर की मेज की मूल तस्वीर को प्रगट करती है। जहाँ कलीसिया एक साथ मिलकर गर्मजोशी के साथ पारिवारिक वातावरण में भोजन करती है। जहाँ विश्वासी लोग एक साथ मसीह की देह तथा उसके लहू के प्याले के लेने में भागीदार होते तथा एक साथ मण्डली के रूप में स्वीकार करते हैं कि उनका उद्धार मसीह के कारण हुआ है। प्रेरितों के धर्ममत के अनुसार मसीही यह कहने के द्वारा कि 'वह संतों की संगति में विश्वास करते हैं, एक दूसरे के प्रति क्षमा को प्रगट करते हैं'। 'प्रेरितों की संगति' दर्शाती है कि सारे विश्वासी एक दूसरे से जुड़े हैं अतः उन्हें एक दूसरे के साथ संगति बनाये रखनी है।

परमेश्वर हमें अनेकों तरह से अनुगृह प्रदान करता है जिसमें प्रभु भोज भी शामिल है, जिसमें हमें झगड़ालू तथा कठोर लोगों के साथ व्यवहार करने का अनुगृह प्राप्त होता है। लोगों को दूसरों के दुष्कर्मों को क्षमा नहीं करना चाहिए बल्कि प्रत्येक जन परमेश्वर की उपस्थिति में एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी हो।

प्रीत भोज की कलीसिया की उस परिस्थिती से तुलना की जा सकती है जिसमें कलीसिया का कोई जन अपने किसी गरीब रिश्तेदार को कलीसिया में ले जाता है और वह कलीसिया में शामिल हो जाता है। प्रेम के भोज में लोग ऐसे लोगों को भी शामिल करने के लिए तैयार रहते हैं जो झगड़ालू व अनाज्ञाकारी हो, यद्यपि उन्हें अभी अनुशासित करने की जरूरत है। उनकी देखभाल की जाती है, उन्हें बाहर नहीं भगाया जाता।

पानी के बपतिस्मे तथा प्रभु भोज का अभिप्राय मात्र इतना ही नहीं है कि हम प्रभु के प्रेम को स्मरण रखे और अपने विश्वास को काम में लाने में समर्पित रहे। बल्कि अपने सम्बन्धों को मज़बूत करने व झगड़ालू परिस्थितियों को समाप्त करने के लिए, हमारे मतभेदों का सामना करने हेतू व्यवहारिक मार्ग भी है। पानी के बपतिस्मे के समय हम जाति या व्यक्तिगत विभिन्नताओं को दूर करते हुए एक दूसरे को स्वीकार करते हैं। संगति के दौरान हम किसी भी बाधा को, जो हमारे आपसी सम्बंधों में रुकावट डालती है, दूर करने के लिए बाध्य है।

निष्कर्ष

आपसी सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रशिक्षण तथा झगड़ों का सही प्रबन्ध करने की योग्यता, कलीसिया के सभी लोगों के लिए अति आवश्यक है। यह अनिवार्य है कि राष्ट्रीय अगुवे, क्षेत्रिय अगुवे, पासबान, तथा कलीसिया के अगुवे पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परमेश्वर की सहायता से, हर एक झगड़े की परिस्थिति में शान्तिमय आशा प्रदान कर सकें। कलीसिया, विश्वास का वह समाज है जो एकता तथा मसीह की महिमा की उस आशा में रह सके जो कहता है, 'मैं सब कुछ नया कर रहा हूँ' (प्रकाशितवाक्य २१:५)।

झगड़ों का समाधान करना कलीसिया के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है। प्रत्येक जन को झगड़ों को कम करने का भरसक प्रयास करना तथा एक दूसरे से प्रेम करने के लिए समर्पित होना चाहिए।

हमारे समुदाय में अनेकों लोगों ने नेतृत्व दल निर्माण करना तथा झगड़ों का समाधान करने की कला कक्षाओं में सीखी है और वे आसानी से उन सिद्धान्तों को कलीसिया में रूपान्तरित कर सकते हैं।

अनेकों बार हमारी कलीसिया में ऐसे बहुगुणी लोग होते हैं जिनको कभी पहचाना या उपयोग नहीं किया जाता।

झगड़ों की वजह व उसके स्वभाव तथा समस्या का समाधान करने वाली प्रक्रिया को समझने के द्वारा, हम कम भय के साथ झगड़ों का सामना इस आशा से कर सकते हैं कि, इससे व्यक्तिगत सम्बन्धों को मजबूती मिलेगी और कलीसिया की सेवकाइयाँ और अधिक प्रभावशाली बनेंगी। ■

गैरी आर ऐलन, डी. मिन- *एनरिचमेंट जनरल के मुख्य सम्पादक तथा स्प्रिंगफील्ड, मिसूरी में स्थित मिनिस्ट्रियल एनरिचमैन्ट कार्यालय के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं*

द्वारा: लैरी ई. हेजलबाकर

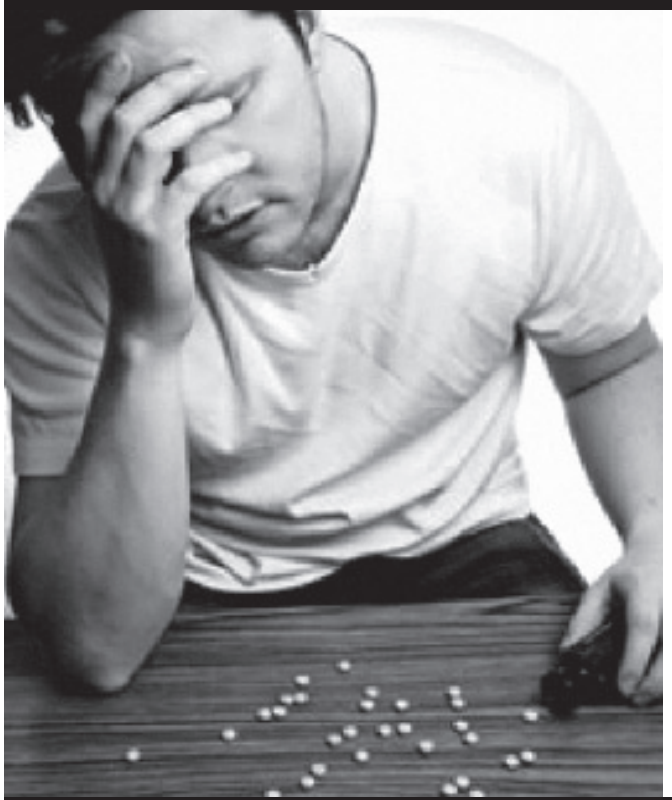

बुरी आदतों से परेशान लोगों की सहायता करना

दृढ़ गढ़ शरीर के काम हैं अतः पासबान ने इनके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

क्या हम एक पाप को संभाल लेते हैं या दृढ़ गढ़ पर जयवन्त होते हैं?

जिम २७ वर्ष का अविवाहित जवान, था जो अपने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय से होकर गुज़र रहा था परन्तु उसकी कोकीन सेवन करने की आदत ने उसे जकड़ रखा था। सलाहकारों ने उसे बताया था कि उसे बिमारी है परन्तु अभी तक वह आदत दृढ़ गढ़ नहीं बनी है। वह अपने लिए सबसे अच्छा, केवल उस बिमारी से लड़ने की इच्छा शक्ति के बारे में सोच सकता था, उसे खत्म करने की नहीं। जिम ने खुद को असहाय व इस आदत से जकड़ा हुआ महसूस किया और उसे छुटकारा पाने की बहुत कम आशा थी। उसकी हालत और भी अधिक बिगड़ती चली गयी। इस दौरान जब वो मेरे पास आया- उसने संकेत किया और, विश्वास दिलाया कि वह अपनी माँ का ख्याल रखेगा- वह अपनी आदत को सहारा देने के लिए कोकिन बेचा करता था। हमारी इस मुलाकात के कुछ समय पश्चात् ही मुझे उसकी माँ से एक फोन कॉल मिलीः जिम जेल में था। नशीले पदार्थ की तलब, व पैसे की कमी के कारण, उसने एक किनारे की दुकान से पैसों की चोरी की तथा एक पुलिस ऑफिसर को मार दिया- यह एक ऐसा निर्णय था जिसके कारण उसे बिना किसी शर्त मौत की सजा मिली।

२१ वर्ष पूर्व, एक बुधवार के दिन, मैंने साधारण से कहीं अधिक संख्या में बीमारों का उपचार किया। मैं शाम की सभा के लिए जा रहा था, और एक जवान स्त्री मेरे पास आई। क्योंकि मैं थका हुआ था इसलिए मैंने उससे अगले दिन आने के लिए कहा। वह सिसकियां भरकर कहने लगी, 'मेरा नाम ग्रेस है। यदि आप मुझे अभी नहीं देखेंगे, तो मेरे लिए आज रात काट पाना मुश्किल है।' उसने अपने ब्लाउज की आस्तीन को ऊपर करते हुए अपनी बांह पर ताजे सूजन के निशानों को जो ऊपर और नीचे थे दिखाया। उसने बड़ी मुश्किल से खड़े होकर लड़खड़ाती हुई आवाज़ में मुझसे कहा कि वह अभी-अभी तीन दिनों की हीरोइन रंगरली मनाकर आई है। वह १५०० डॉलर खर्च कर चुकी, टूटी हुई, डरी व आशाहीन थी।

मैंने उससे कहा ठीक है मैं तुम्हें कुछ मिनट का समय देता हूँ। वह बहुत रोई, चिल्लाई, उसके शब्द लड़खड़ाते हुए भाव-विभोर हो रहे थे तथा वह काफी बार अपनी कुर्सी से गिर पड़ी। उसकी उन सिसकियों और मेरे प्रार्थना करने के बीच, मैंने एक दर्शन पाया। मैंने एक तकनीकी काम करने वाले का हाथ तथा एक प्रयोगशाला में पहनने वाले कोट की आस्तीन को देखा। वह हाथ नीचे आकर, नागों को पकड़कर उनका ज़हर निकाल रहा था, जैसे-जैसे मैंने उसे आगे देखा उस हाथ ने उस ज़हर को परिवर्तित कर अमृत बना दिया।

पहले तो मैं उसे समझ नहीं पाया। फिर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि सम्पूर्ण तस्वीर की व्याख्या करती दूसरी तस्वीर बनायी जा रही है। मैंने देखा कि तस्वीर में दिखने वाला हाथ ग्रेस का था जिसने वह लैब का कोट पहन

छुटकारे हेतु चंगाई की प्रक्रिया के तहत अंगीकार करना सबसे पहला कदम है।

रखा था। वह उस प्रयोगशाला के कोट को पहने हुए उस विष को अमृत में परिवर्तित कर रही थी।

जो कुछ मैंने दर्शन में देखा मैंने उसे बता दिया। मैंने उससे कहा कि परमेश्वर उन्हें छुटकारा देने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, वह जाकर परमेश्वर के प्रेम व उसकी सामर्थ (अमृत) का प्रचार करेगी जिसके कारण लोग हिरोईन व कोकीन की लत से छुटकारा पायेंगे।

उसके कुछ ही घण्टों के पश्चात् परमेश्वर ने उसे हीरोईन की लत (दृढ़ गढ़) से छुटकारा दे दिया।

आज, वह सेवकाई में हैं और नशीले पदार्थों से प्रभावित लोगों की सहायता करती है। उन्हें नशीले पदार्थों से छुटकारा पाये हुए २१ वर्ष हो चुके हैं।

आंकड़े

अमेरिका के स्वास्थ्य विभाग व मानवीय सेवाओं के सर्वेक्षण के अनुसार, सन् २००६ में कोकीन, हीरोइन इत्यादि नशीले पदार्थों का गलत इस्तेमाल या शोषण करने वाले, करीब १४ लाख मामले देश के अस्पतालों के आपातकालीन कक्ष में पंजीकृत हुए। मदिरा के अत्यधिक सेवन की वजह से करीब १००००० लोगों की मृत्यु हो गयी। बुरी आदतों के शिकार तथा शोषण के सन्दर्भ में राष्ट्रीय केन्द्रों ने इस प्रकार का लेखा दिया कि जो लोग मादक पदार्थ, मदिरा का सेवन करते हैं वह उससे ५० गुना ज़्यादा कोकीन व हीरोईन का इस्तेमाल भी करते हैं। उससे भी बढ़कर, यह तथ्य सामने आया कि १९८५ से लेकर अब तक करीब एक करोड़ चालीस लाख लोग, तम्बाकू, शराब, मादक पदार्थ व नशीले पदार्थों के सेवन की वजह से अस्पताल में दस्तक दे चुके हैं और यह आंकड़ा जवानों में जबरजस्त तेज़ी पकड़ रहा है। यह अनुमान लगाया जाता है कि १२ कक्षा के एक तिहाई विद्यार्थी साप्ताहिक तौर पर शराब का सेवन करते हैं। मादक पदार्थों के शोषण की दर निरन्तर बढ़ रही, खासतौर पर जवानों के बीच में।

बुरी आदत का चक्र

बुरी आदत के चक्र के अधिक विवरण के लिए वैबसाइटः http://www.drugrehab.net में जाकर देखें।

प्रथम, अधिकतर शिकार लोग बुद्धिजीवी लोग हैं जिनके पास अपने भविष्य को लेकर योजनाएं भी हैं,

दूसरा, शिकाश व्यक्ति, आम जिन्दगी में उठने वाली समस्याओं का समाधान करने में असमर्थता की वजह से नशीले पदार्थों को सहायक के रूप में इस्तेमाल करता है।

तीसरा, नशीले पदार्थ का इस्तेमाल, शिकार व्यक्ति की अपने जीवन की हीन भावनाओं से निकलने या न्यूनता को बराबर करने में सहायता करता है। उदासी, दर्द, रिश्ते, नौकरी की समस्या, या किसी क्षेत्र में विजय न पा पाना या फिर अनचाहे मुद्दे (जैसे मोटापा) आदि नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करने के लिए सामान्य बहाने हैं।

चौथा, नशीला तत्व दर्द को हर लेने वाला बन जाता है। यह उस व्यक्ति के भावनात्मक व शारीरिक दर्द को कम करके उसे अपनी समस्याओं से बचने का एक मार्ग प्रदान करता है। परन्तु जब वह बुरी आदत अपना कब्जा करती है तो नई समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। उस वक्त लती व्यक्ति अपनी तलब को पूरा करने के लिए कुछ भी कर गुज़रता है।

पाँचवा, नशीले पदार्थों पर जीवन आधारित होने पर व्यवहार में अनेकों बातें जुड़ जाती हैं - बातचीत करने में परेशानी, अपने पेशे ने कमज़ोर प्रदर्शन, तथा कमज़ोर शरीर - आम बातें हो जाती हैं। लत, लती के जीवन को चलाती व उसके विचारों पर अपना कब्जा और अधिकार कर लेती है। इस समय, वह नशीला पदार्थ एक दृढ़ गढ़ बन जाता और धीरे-धीरे शिकार के जीवन को नष्ट कर देता है।

छठा, नशीला पदार्थ, व्यक्ति के जीवन पर नियन्त्र कर लेता है तथा वे इन चीजों का इस्तेमाल करने के लिए पीड़ाओं का सहते हैं। इससे उनमें हीनभावना, निराशा तथा अलग रहने की भावना उत्पन्न होती है।

सातवा, शिकार, आत्म-हत्या करने का प्रयास करता है। एक कार्य क्रम के बाद दूसरे कार्यक्रम, एक इलाज से दूसरे इलाज की असफलता तथा एक नुकसान से दूसरा नुकसान, लती को अकेलेपन, निराशा व पराजय के एहसास में धकेल देता है। अतः वह नशीले पदार्थ के गुलाम बन जाते हैं।

यह कैसे होता है

किसी चीज की लत पड़ना एक सामान्य बात है। व्यक्ति का स्वभाव शोषण करना है। कोई भी चीज एक आदत (दृढ़ गढ़) बन सकती है। एक बार कोई भी चीज किसी व्यक्ति की आदत बने, फिर वह उस व्यक्ति के जीवन, विचारों तथा कार्यों पर कब्ज़ा कर लेती है। यह तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी भी कारण वश, कुछ क्षणों का आनन्द महसूस करने के लिए नशीले पदार्थ का सेवन करता है। हमारा व्यवहार, तांत्रिकाकोशिकों के समूह में एक तंत्रिकीय रास्ता बनाने लगता है। अतः जितना ज़्यादा व्यवहार, तलब के उकसाये बदलता है उतना ही अधिक उसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, और इसी तरह एक व्यवहार- एक बुरी आदत या लत में तबदील हो जाता है।

एक लत एक ऐसी पुनःप्रगट होने वाली मजबूरी या दबाव है जो मनुष्य के विचारों और कामों पर सम्पूर्ण रीति से अधिकार जताकर, ऐसा गढ़ बन जाती है जिस पर जय पाना नामुमकिन हो जाता है। इसी

कारण अधिकतर योजनाएं या उपचार लत के साथ समझौता करते हुए जीवन जीने के लिए बनायी जाती हैं न कि उन गढ़ों पर विजय प्राप्त करने के लिए।

लत के सन्दर्भ में चिकित्सकीय तरीका

यदि सेवक गण लत का वर्णन करने के लिए चिकित्सीय तरीकों पर विश्वास करते हैं तो उपरोक्त ७ नम्बर का चक्र बिल्कुल ठीक है। एक लती व्यक्ति की बहुत थोड़ी मात्रा में सहायता की जा सकती है। जब मरीज अपने बाकी के जीवन को जीने के लिए उस आदत से भयंकर संघर्ष कर रहा हो तो पासबान एक मरीज को ज़्यादा से ज़्यादा अपनी लत को काबू में करने के लिए कुछ सलाह दे सकता है।

अनेको चिकित्सीय विभाग के विशेषज्ञ विश्वास करते हैं कि बाइबल कोलेज सेवकों को नशीले पदार्थों के शिकार व्यक्तिओं की सहायता करने या सेवा करने हेतू उचित प्रशिक्षण नहीं देता है। यदि सामान्य विचार यह है कि लत एक बीमारी है तो मैं उससे सहमत होऊँगा। बीमारी का इलाज डाक्टर करते हैं पास्टर नहीं। यदि पास्टर चिकित्सकीय तरीकों को स्वीकार करते हैं तो उन्हें मरीजों को उन अस्पतालों में भेजने के लिए उस क्षेत्र के तमाम अस्पतालों की सूची तैयार करनी पडेगी। नशीले पदार्थ से उत्पन्न बेनाम बीमारी तथा अन्य उपचारों के लिए यह अस्पताल व स्वास्थ्य केन्द्र, हस्तक्षेप करके, मरीज को लत के साथ सही रूप में समायोजन करने के लिए शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

लत को लेकर बाइबल का दृष्टिकोण

यदि हम (सेवक) बाइबल को गम्भीरता से लेते हैं तो, यह लत, शरीर के कामों द्वारा उत्पन्न होने वाले दृढ़ गढ़ हैं। वे ऐसी आत्मिक समस्याएं हैं जो स्वयं को शारीरिक रूप में प्रगट करती हैं। नशे के सिलसिले में, वर्तमान चिकित्सा सम्बन्धी परिभाषा दावा करती है कि मदिरा पान की आदत का मूल एक पैदाइशी प्रवृत्ति है। अतः एक शराबी खुद अपने ही DNA का शिकार बनता है। ये पासबान इस बात में सहमत हैं- वे स्वीकार करते हैं कि मदिरा पान एक ला ईलाज बीमारी है- वह व्यक्ति आज भी नशैड़ी है और भविष्य में भी वैसा ही बना रहेगा।

इस विषय वचन अलग आधार पर मजबूती से खड़ा है। पियक्कड़पन एक पाप व शरीर का कार्य है (गलतियों ५:२१)। पासबान को बाइबल के अनुसार बुरी आदत की परिभाषा को अपनाना चाहिए तथा उसके शिकार व्यक्ति के छुटकारे हेतू कलीसिया में सेवकाईयों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

एक व्यक्ति को शुद्ध होने के लिए क्षमा माँगना जरूरी है (१ यूहन्ना १:९) यदि पासबान चिकित्सा सम्बन्धी बातों को मानते हैं, तो उन्हें पाप के प्रबन्ध को भी स्वीकार करना होगा। एक लत, किसी मधुमेह की बीमारी के समान नहीं है। वैद्य सिद्धान्तों के आधार पर लत के तरीके स्वीकार करना तथा पाप के सन्दर्भ में बाइबल की परिभाषा का अनादर करना अर्थहीन बात है। हमें विश्वास करना चाहिए कि हम जयवन्त से बढ़कर हो सकते हैं।

इस विषय पर विचार करें

एक आपराधिक मानसिकता वाला व्यक्ति अमेरिकियों को भगाने की कोशिश करता है। हम अपने आचरणों से बचने के लिए गृहण करने योग्य बहाने ढूंढ़ते हैं। यदि हम अपने आप को समझा लेते हैं कि मेरी बुरी आदत अनुवांशिक रोग है तो समझ लीजिए हमें हमारे पापों को क्षमा करने की एक वजह मिल गयी। यदि कोर्द व्यक्ति किसी ऐसे परिवार से ताल्लुक रखता हो जिसमें उच्च रक्तदाब या मधुमेह की बीमारी प्रबल हो, तो इसमें कोई अचम्भा नहीं होगा कि डाक्टर उसे वही दवाई दें जो उसके परिवार के अन्य लोगों को दी थी। उसका वंश या परिवार, उपचार का वर्णन करता है।

परन्तु दृढ़ गढ़ कोई बीमारी नहीं है; वे शरीर के काम हैं, अतः पासबानों को उनके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।

लोग उत्पत्ति से ही विवाह-पूर्व व्यभिचार के लिए समय से पहले तैयार रहते हैं। परन्तु जब एक व्यभिचारी परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होगा तो वह अपने पाप से बचने के लिए मानवीय स्वभाव या प्रवृत्ति को बहाना नहीं बना पायेगा। इसी प्रकार से नशीले पदार्थों का शिकार भी परमेश्वर के सामने खड़े होकर, चर्च द्वारा बनायी गयी क्षमा की प्रार्थना पर, अपनी आदत को लेकर कोई दोष नहीं लगा सकेगा। परमेश्वर उससे कहेगा, हे अधर्म के करने वाले, मेरे सामने से दूर हो जा'।

एक पासबान क्या कर सकता है?

पासबान को बाइबल के अनुसार दृढ़ गढ़ों को ढा देनेवाले तरीके को अपनाना तथा उसका इस्तेमाल करना चाहिए और कलीसिया में मसीह केन्द्रित कार्यक्रमों को प्रारम्भ करना चाहिए। टर्निंग पोइंट नामक कार्यक्रम केवल गढ़ों के कब्जे में पाये जाने वाले लोगों की सहायता ही नहीं करता परन्तु कलीसिया के सह-कार्यकर्ताओं को समूह अगुवा बनने में प्रशिक्षित करता है।

यदि पासबान टर्निंग पोइंट कार्यक्रम को खरीदने में असमर्थ हैं और अपनी ही सेवकाई का इस्तेमाल करना चाहते हैं; तो निम्नलिखित तरीके, शिकार व्यक्ति की सहायता करने में मददगार कदम होंगे। कुछ वर्षों पूर्व मैंने १२ कदमों के कार्यक्रम में से बाइबल के अनुसार सात-कदमों का निर्माण किया। कलीसिया प्रभावशाली ढंग से इन तरीकों का इस्तेमाल कर सकती

मसीही विश्वास करते हैं कि सत्य का न मानना तथा बुरी आदत में पड़ना एक पाप है, बीमारी नहीं।

हैं। इसके अन्तर्गत जरूरी होगा कि पासबान या उसका सहायक इन कदमों में नायक की भूमिका अदा करें।

पहला कदमः अंगीकार- बुरी आदत के शिकार व्यक्ति को सर्वप्रथम यह स्वीकार करना है कि वह इन गढ़ों को ढाने में असमर्थ है। ऐसा करने से वह बुरी आदत के स्वाभित्व को स्वीकार करता है। दूसरा कुरिन्थियों १२:१० कहता है 'क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी सामर्थी हूँ।' छुटकारे हेतू चंगाई की प्रक्रिया के तहत अंगीकार करना सबसे पहला कदम है। जब तक हम परमेश्वर से प्रार्थना नहीं करते, परमेश्वर कभी भी हस्तक्षेप नहीं करेगा। यूहन्ना १:९ 'यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं।'

दूसरा कदमः असहाय स्वीकार करना- पासबान को पीड़ित की यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि केवल परमेश्वर ही उसके तान्त्रिकीय क्रिया हो पुनः सामान्य करने में सहायता कर सकता है। अतः परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी लाचारी का अंगीकार करें। परमेश्वर पीड़ित को पूर्व रीति से पुनःस्थापित कर सकता है परन्तु शर्त यह है कि वह स्वयं को अयोग्य स्वीकार करे। परमेश्वर ने मेरे कार्यालय में ग्रेस को छुटकारा दिया, परन्तु वह कार्य तब हुआ जब उसने यह पहचाना की उसे परमेश्वर की ज़रूरत है। उस पर और उसकी योग्यताओं पर विश्वास करना अति आवश्यक है। छुटकारा, अकस्मात या एक प्रक्रिया के तहत हो सकता है।

तीसरा कदमः आत्म-समर्पण व क्षमा- हमें पीड़ित को समझाना है कि उसे परमेश्वर के सम्मुख आत्म-समर्पण करना है। बन्धुवाई को तोड़ने के लिए व्यक्ति में खुद की इच्छा शक्ति का होना ज़रूरी है। केवल परमेश्वर ही एक पीड़ित को पूर्ण रीति से जयवन्त होने में सहायता कर सकता है। परमेश्वर से आपको क्षमा व आपकी सहायता करने के लिए कहें। यीशु ने कहा 'हे बोझ से दबे व परिश्रम करने वालों मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा'' (मत्ती ११:२८ व १ यूहन्ना १:९)

चौथा कदमः सच्चे हों- एक पीड़ित को तब तक वह नहीं मिलेगा जिसकी उसको जरूरत है, जब तक वह उन कामों को न करे जिसे उसे करना चाहिए। यदि हम अपने पापों को मान लें तो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करेगा। पवित्र आत्मा से आपके गलत व्यवहार, स्वभाव, दृष्टिकोणों की जाँच करने के लिए प्रार्थना करें, और फिर ध्यान से सुने कि परमेश्वर आपसे क्या कहता है 'इस संसार के सदृश्य न बनो, परन्तु अपने मन के नए हो जाने से तुम परिवर्तित हो जाओ (रोमियो १२:२)।' वेनी.डब्ल्यू. डायर ने 'अपने विचार व अपने जीवन को बदलो' नामक पुस्तकों की श्रृंखला लिखी। यह एक बाइबलानुसार सिद्धान्त है, परन्तु पीड़ित को जानना जरूरी है कि वह क्या बदले।

पाँचवा कदमः परमेश्वर से उसकी सहायता माँगें- तुम लालसा तो करते हो पर पाते नहीं, ... तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि तुम माँगते नहीं। तुम माँगते हो पर पाते नहीं क्योंकि बुरे उद्देश्य से माँगते हो (याकूब ४:२,३)। परमेश्वर की इच्छा यह है कि मनुष्य शारीरिक मानसिक व आत्मिक रूप में स्वस्थ्य रहे। जब हम पापों पर विजय पाने के लिए परमेश्वर से उसकी सहायता माँगते हैं तो कोई अनुचित कार्य नहीं करते। याद रखें, मसीही विश्वास करते हैं कि सत्य का न मानना व बुरी आदत में पड़ना पाप है, बीमारी नहीं। एक पीड़ित को चाहिए कि वह प्रतिदिन हर क्षण, अपने जीवन के शैतानी गढ़ पर जय पाने में परमेश्वर की सहायता माँगें।

छठा कदमः बिना रुके परमेश्वर के वचनों को पढ़ें व प्रार्थना करें- यदि हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं, तो हम उसे अपने जीवन का सहायक मानकर अपना क्यों नहीं लेते? 'क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल और किसी भी दोधारी तलवार से तेज है वह प्राण और आत्मा, जोड़ों और गूदे दोनों को आरपार बेधता और मन के विचारों तथा भावनाओं को परखता है। हमें निश्चय ही विश्वास करना चाहिये कि परमेश्वर का वचन उसकी सामर्थ्य है, जो बातें हमें जाननी चाहिए तथा जिसके लिए हम प्रार्थना करते हैं प्रगट करता है, और प्रगट करता है कि हम वचन अनुसार अपना जीवन कैसे जियें ताकि हम उन दृढ़ गढ़ों को गिरा सकें।

सातवा कदमः साक्षी दें- परमेश्वर का धन्यवाद दें तथा दूसरों में सुसमाचार सुनाएं (अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किये हैं' मरकुस ५:१९)। साक्षी के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा होता है। एक गवाही की सभा जय पाये हुए व्यक्तियों को अपने जीवन में, परमेश्वर के जीवन परिवर्तित करने वाली सामर्थ और उसके वचन को दूसरों मे बाटने का अवसर होता है। सुलेमान कहता है, जीभ में जीवन व मृत्यु की सामर्थ पायी जाती है (नीतिवचन १८:२१)। जीवन को बोलें।

निष्कर्ष

परमेश्वर हमें पापों और दृढ़ गढ़ों के क्षेत्र में जयवन्त होता हुआ देखना चाहता है- उससे समायोजन करते हुए नहीं। अधिकतर पासबानों का सामना ऐसे लोगों के साथ हुआ है जिनके जीवन में जीवन पर नियन्त्रण करने वाले मुद्दे होते हैं। हमारी भूमिका और कर्त्तव्य है कि हम उन्हें आत्मिक मार्गदर्शन व परामर्श प्रदान कर सकें। या डा. फिल से परामर्श लेने के लिए, हम परमेश्वर के वचन को नज़रअन्दाज़ न करें, हमें परमेश्वर का वचन पढ़ना तथा उसे अपने जीवन में कार्य करने की अनुमति देना चाहिये ताकि वह हमारे द्वारा अपने कार्यों को तब प्रगट करे, जब हम अपने उस ज्ञान का इस्तेमाल करें जिसने पहले हमें परमेश्वर से अलग कर दिया था। वह हमारे बीते जीवन की घटनाओं को विशेषकर, उन दुखित घटनाओं को जो पाप व दृढ़ गढ़ों द्वारा ढकी हैं, दूसरों को उसके (परमेश्वर) प्रेम व उसकी सामर्थ्य की सुरक्षा में लाने में इस्तेमाल करेगा। यह सब उसकी महिमा और उसकी योजना के लिए होगा। ■

लैरी ई. हेजल बाकर, Ph.D., *एक ऐसेम्बली ऑफ गॉड के सेवक हैं, मनोविज्ञान के प्रोफेसर तथा लेकलैण्ड, फ्लोरिडा की दक्षिणी विश्वविद्यालय में व्यवहारिक व सामाजिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष हैं। वह हारबर प्रशिक्षण केन्द्र के संस्थापक व अध्यक्ष भी हैं जो एक लाभहीन संस्था है और सेवकों व उनके परिवारों की सेवा के लिए समर्पित है।*

चरित्र

परमेश्वर के वरदानों का फायदा उठाना

हर एक कलीसिया में अनेक प्रकार के चरित्रों की सूचि होती है और हर एक चरित्र के अन्दर रचनात्मक तरीके से इस्तेमाल होने की गुंजाइश होती है।

जब मैं चरित्रों की बात कर रहा हूँ, तो मैं विशेष कर उन लोगों के बारे में बोल रहा हूँ जिन्हें अधिकतर पासबान लोग नज़रअन्दाज कर देते हैं। इन लोगों के चरित्र में एक ऐसा विशेष लक्षण होता है जो उनके द्वारा किये गये बाकि कार्यों पर प्रबल ठहरता है।

बजाय यह प्रश्न करने के कि ***हे प्रभु मैं ही क्यों?*** हमें इन सक्रिय लोगों का प्रयोग करने के रचनात्मक तरीके ढूंढ़ने होंगे। हम किस प्रकार से एक विशेष गुण का फायदा उठा सकते हैं या किसी फूल को खिलने में मदद कर सकते हैं जो खिलने का इन्तजार कर रहा है परन्तु अपने चरित्र के दोषों के कारण दबा है?

मैंने हाल ही में, एक लेख पढ़ा 'हर सभा में अनेक प्रकार के चरित्रों की सूचि पायी जाती हैः उन्हें न दबाये'' जिसके लेखक प्रोफेसर वर्जीनिय किड है जो कॅलिफोर्निया, सैक्रामेन्टो, कॅलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय में सन्देश साधन (बातचीत) विभाग के प्रोफेसर है

यद्यपि यह कलीसिया-आधारित लेख नहीं है फिर भी मैं अपने ३० वर्ष के कलीसियाई जीवन में अनेकों लोगों को अपनी अलग पहचान में देख पाया हूँ। मैंने क्रिस को आलोचक, लोई का पार्टी में खोये जीवन के रूप में, तथा मौली को एकाधिकार रखने वाले व्यक्ति के रूप मे देखा।

मैं विशेषकर दो विचारों को लेकर उत्साहित थाः ***मैंने कैसे इन लोगों का इस्तेमाल किया या नहीं किया है? और किस तरह मैं इन चरित्रों को सकारात्मक रूप से योग्य बनाकर कलीसिया के लिए परमेश्वर के वरदानों का लाभ उठा सकता हूँ?***

जब बहुगुणी व्यक्ति आपके और उस सेवकाई के बीच आते हैं जो आपने पूरी मण्डली के लिए सोची है तो वह एक चित्त, बार-बार दोहराने वाले तथा अन्दरूनी दुख का कारण बन जाने हैं। परन्तु यदि हम इन लोगों में पाये जाने वाली सकारात्मक खूबियों का फायदा उठाये तो कैसा रहेगा? क्या हम दखल देने वालों को एक आशीष में बदल सकते हैं? हमें बडे व खुले ढंग से विचार करने तथा इन चरित्रों को क्षमताशाली लोगों के रूप में देखने की आवश्यकता है।

उद्देश्य की भूमिका के जैसे व्यवहार करने के तरीके को पहचानना

''सामुहिक सभाओं की क्रियात्मक भूमिका'' नामक कॅनथ बॅने तथा पॉल शिएट द्वारा लिखित प्रारम्भिक अभिलेख में, जो सामाजिक मुद्दों पर लिखे गये लेखः नम्बर ४, १९४८ से लिया गया है, उन व्यवहारों के तरीको को दर्शाता है जिसे लेखक ने 'लक्ष्य की भूमिका' नाम दिया है।

पहल करने वाला समस्याओं को परिभाषित करता, विचार प्रदान करता तथा समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है।

खबरों का खोजी स्पष्टता चाहता है, दूसरों को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करता है, तथा सच्चाई की इच्छा करता है।

शक्ति प्रदान करने वाला, सदस्यों को काम में लगाता है।

मार्गदर्शक, समूह को सही राह में बनाये रखता तथा चर्चाओं में अगुवाई करता है।

सचिव, समूह की बढ़त का हिसाब रखता तथा पुरानी बातों व कामों को याद दिलाता है।

क्या आप पादरियों की परिषद में इनमें से किसी एक लक्षण को देख पाते हैं?

बैने और शिएट, सामाजिक कार्यक्रमों को, इस क्षेत्र की पाँच मुख्य भूमिकाओं को मिलने व पहचानने के लिए, प्रतिपादन करने वाली प्रतिक्रियाओं के रूप में भी देखते हैः

प्रोत्साहन करने वाला, सहायता, प्रशंसा व स्वीकृति प्रदान करता है।

मेल मिलाप कराने वाला, झगड़ों को सुलझाकर समझौता करवाता है।

हँसानेवाला, मजाकिया बातों के द्वारा लोगों में विश्राम की अवस्था उत्पन्न करता है।

एक द्वारपाल, अवसर की इच्छा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मौका

देने के द्वारा सारे वार्तालाप के माध्यमों को नियन्त्रित करता है। ज्यादातर सभा का जिम्मेदार व्यक्ति इस भूमिका को अदा करता है।

एक अनुसरण करनेवाला, दूसरों के विचारों को गृहण करके समूह के साथ चलता है।

क्या आप किसी ऐसे गुणों से पूर्व व्यक्ति को अपने आसपास बैठे देख पाते हैं?

प्रत्येक मण्डली के भीतर कुछ सदस्य अवश्य ही सामुहिक भलाई की चाह करने से बढ़कर अपनी भलाई चाहते हैं। हमें ऐसे लोगों को सबका ख्याल करने वाले लोगों में- जो सबकी भलाई के लिए काम करते हों, तबदील करना होगा।

क्या हम ऐसे व्यक्ति को जो सबकी छोटी-छोटी बातों पर नज़र रखने वाला व्यक्ति है देखते हैं क्या, उसे महत्वपूर्ण सभाओं का लेखा रखने, एक प्रचारकीय सभा का परिणाम या उसका सार बताने, या मिश्नरियों द्वारा प्राप्त पत्रों के आधार पर लेख लिखने का काम सौंपा जा सकता है?

क्या आपके उत्साहित करने वाले व मजाकिया लोग स्वागत करने का काम, लोगों का अभिवादन करने का काम और सामाजिक कार्यक्रमों की योजना बनाने का काम कर सकते हैं?

क्या एक खबरों का खोजी, कलीसिया की योजनाओं के लिए, संदेश की पृष्टभूमि खोजने, तथा मण्डली में भविष्य में सम्भवतः किन सेवकाईयों को शामिल किया जा सकता है, कि खोज कर सकता है?

कठिन लोगों का मार्गदर्शन करना

वर्तमान समय में कलीसिया के अन्दर बहुत से लोग अध्याधिक प्रबल तथा बहुत से निष्क्रिय या उदासीन होते हैं। चलिये मैं आपको अपने अनुभवों से कुछ लोगों के बारे में बताता हूँ।

मौली, एकाधिकार करने वाली एक ऐसी महिला थी जो कभी किसी को नहीं बोलने देती थी। उसकी बहुत सी बातों में किसी भी लाभदायक बात को समझ पाना मुश्किल था। मौली के साथ मैंने उसके यथा सम्भव नजदीक बैठने के द्वारा शुरू किया, यह केवल नज़रों को मिलने से रोकने के लिए था, जिससे किसी भी व्यक्ति को बोलने की आजादी मिलती है। जब वह बोला करती तो मैं यह कहकर उन्हें रोक देता, यह वास्तव में विचार करने योग्य बात हैः चलो देखें कि बाकि लोग इस बारे में क्या कहते हैं।'' आप इस प्रकार समूह का ध्यान खींच सकते व उन्हें चुप भी करा सकते होः 'जिन लोगों को अभी तक इस विषय पर अपने विचार रखने का अवसर नहीं मिला है मैं उनके विचारों को सुनना चाहूँगा। यदि इससे काम नहीं बनता, तो मैं उससे व्यक्तिगत रूप में बात करता, या मौली से दूसरों की अपने विचार रखने में सहायता करने के लिए कहता।

शैली, एक शान्त स्वभाव की स्त्री थी, जिस पर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं जाता था परन्तु उसके पास विचारों का खज़ाना था। सबसे बड़ी समस्या उससे उसका सहयोग पाना था। हमारे दो प्रयास शैली पर कामयाब हुए। प्रथम, उसे सुरक्षित महसूस होने से पूर्व लोगों को जानने की जरूरत थी, बाद में उसने उन लोगों के साथ घनिष्ठ दोस्ती कर ली, वह उनसे ज्यादा बातचीत करने लगी। दूसरा, मैंने उनसे मण्डली व लोगों के बारे में उसके ईमानदार विचार प्रगट करने के लिए कहा। आपकी मण्डली की शैलियाँ कब बातचीत करती, सकारात्मक प्रतिउत्तर देती व अपना सहयोग प्रदान करती हैं।

वेनडैल, एक उदासीन तथा अकेलापन महसूस करने वाला ऐसा व्यक्ति था जो अधिकतर सोचता था कि वह बेकार है। उसे एक विशेष काम की आवश्यकता थी। मैंने सोचा कि शायद वह काम खत्म न कर पाये परन्तु जिम्मेदारी पड़ने से वेनडैल कामों में शामिल हो गया। कक्षा की उपस्थिति (हाजरी) लेने, जल-पान तैयार करने व द्वितीय श्रेणी की सभाओं में सेवा करने का परिणाम था कि वह स्वामित्व के स्तर पर सोचने लगा।

लोई, जो पार्टियों का शॉकीन व्यक्ति था, ने हमें तनाव से मुक्त किया, परन्तु उसके हँसने की आदत बहुत परेशानियाँ खड़ी कर देती थीं। मैंने बड़ी सज्जनता के साथ यह विचार करते हुए कि उत्तम व समझ बूझ से की गयी मजाक एक समूह के लिए लाभदायक होगी, समस्या का सामना किया। हमने अकेले में सहमति की कि वह अपने मजाक को थोड़ा कम करेगा। परन्तु उसके साथ मैंने उसके उत्तेजक व्यवहार का लाभ उसे पुरुषों की सेवा परिषद में डालकर तथा कलीसिया की पिकनिक कार्यक्रम पर अधिकारी (जिम्मेदार) ठहराकर, उठाया।

क्रिश ने बहुत से विचारों की आलोचना की, परन्तु फिर भी वह हमारी मण्डली के लिए कोई रुकावट नहीं थी। जब क्रिश को सही तरीके से इस्तेमाल किया गया, तो वह बहुत सी बातों को स्पष्ट करने व सही निर्णय लेने में बहुत महत्वपूर्ण अंग साबित हुआ। विपक्षी मत की अनुपस्थिति का परिणाम विनाशकारी हो सकता है। देखभाल करते समय हमेशा हाँ कहने वाले लोगों की मण्डली सफल नहीं होती; अनेकों बार एक आलोचक आपको रूकने तथा आपके मकसद पर पुनःविचार करने पर मजबूर करता है।

ऐन्डी, बहस करने वाला, आलोचक से बिल्कुल फरक है और किसी मुद्दे को स्पष्ट करने में सहायता नहीं करता। ऐन्डी हमेशा झगड़ों में शामिल रहता था। बिना बहस करे मानों उसे खाना हजम नहीं होता। मैं अपनी समझबूझ वाले मजाक का इस्तेमाल, कर बहस को नज़रअन्दाज करने का ही प्रयास करता था, क्योंकि कई बार वाद-विवाद एक झुण्ड के विनाश का कारण हो सकता है। यदि झगड़ा बेकाबू हो जाता तो मैं अपने किसी विश्वासयोग्य व्यक्ति की मदद से ऐन्डी से बातचीत के द्वारा समस्या को सुलझाने का प्रयास करता था।

जिन चरित्रों को परमेश्वर ने हमारी देखरेख में रखा है कलीसिया को उन चरित्रों का इस्तेमाल करने में रचनात्मक होना चाहिए। आइये हम कोयले को हीरा, समस्याओं को सम्भवताओं तथा कलियों को फूल बनने में मदद करें।

झगड़ों में हस्तक्षेप करने तथा कुशलता के साथ झगड़ालू तथा समस्या खड़े करने वाले लोगों को अगुवाई करने के द्वारा पासबान एक कुशलता से भरे संसार को खोल सकता है जो चरित्रों की न्यूनता के पीछे छुपा है। तब हम भविष्य में अपनी कलीसिया के अन्दर ऐन्डी, शॅली और वॅन्डलस को उन आशीषों के रूप में आते हुए देखेंगे जैसा परमेश्वर उन्हें देखना चाहता है। ■

क्लाइड डब्ल्यू हार्वे, *सेन्ट्रल एसेम्बली ऑफ गॉड, सुपीरियर, विस्कान्सिन में सह-सेवकाईयों के निर्देशक हैं।*

अपनी कलीसिया से कैसे प्रेम करें

लेखक **नील बी. वाइसमैन**

एक गीत के बोल इस प्रकार हैं ''जैसे घोड़ा और ताँगा, वैसे ही प्रेम व विवाह का संबंध साथ-साथ चलता है। परंतु इस गीत के लिखे जाने से शताब्दियों पूर्व पौलुस ने प्रेम और विवाह को लेकर ऐसे ही शब्दों को लिखा जिसकी तुलना किसी गीत से नहीं की जा सकती।

फिर भी पौलुस अपने गीत में कुछ महत्वपूर्ण बातों को जोड़ता है। इफिसियों ५:२२-२३ की ११ हल्की परंतु अति कठिन आयतों में, पौलुस पवित्र, शुद्ध, निष्कलंक व सुंदर कलीसिया; कलीसिया पर मसीह की प्रभुता; पारस्परिक अधीनता; तथा पति व पत्नी के बीच संबंधों की चर्चा करता है। फिर, मानों कि जैसे वह बातें, खुद उसके लिए समझने में पेचीदा हो, पौलुस इस प्रबल वचन को लिखता है 'यह भेद तो बड़ा है और मैं इसे पूर्ण रीति से समझने का दावा नहीं करता (इफिसियों ५:३२ द मैसेज अनुवाद)।

टीका करने वाले बहस करते हैं कि इस वाक्य में 'भेद' का अर्थ विवाह से है या कलीसिया से। प्रत्येक सुखी परिवार जानता है कि विवाह एक चमत्कार व भेद व संतुष्ट करने वाला संबंध है और यह बातें एक साथ काम करती हैं। कौन इस बात को समझा सकता है कि एक स्त्री व एक पुरुष जो शारीरिक, भावनात्मक व आंतरिक रूप में फ़र्क़ होते हैं? कैसे एक साथ सुखद जीवन का निर्माण कर सकते हैं? पौलुस ठीक कहता है- यह एक बड़ा भेद है।

जब कोई व्यक्ति वचन के इस अनुच्छेद को पढ़कर इसके मतलब को समझने का प्रयास करता है तो यह अनुच्छेद बताता है कि किस प्रकार एक सेवक अपनी मंडली के साथ सुखी व प्रेमपूर्ण संबंधों को बना सकता है।

जब पौलुस कलीसिया व हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करता है तो अपने दिल से उसे सुने 'मसीह का प्रेम कलीसिया को संपूर्ण बनाता है। उसके वचन उसकी (कलीसिया) सुंदरता को बढ़ाते हैं, जो भी कुछ वह कहता और करता है वह उसकी उत्तमता को बाहर प्रगट करने के लिए है, अर्थात उसे तेजस्वी, पवित्र व निर्दोष प्रस्तुत करने के लिए।'' (इफिसियों ५:२६,२७ द मैसेज)

हमारे प्रेम की तुलना कभी भी मसीह के प्रेम से नहीं की जा सकती, फिर भी वह हमारा सहभागी है। हम और अधिक उलझ जाते हैं क्योंकि कई कलीसियाओं को दूसरों की तुलना में प्रेम करना अधिक आसान होता है। यह बात पासबानों के सिलसिले में भी सत्य है।

सेवकाई के लिए आवश्यक - प्रेम संबंध

चाहे आसान हो या मुश्किल, एक पासबान व उसकी मंडली के बीच प्रेम का संबंध होना अति-आवश्यक है, क्योंकि कलीसिया का प्रभावशाली होना सेवक व मंडली के बीच स्वस्थ संबंधों पर आधारित होता है।

पासबान व मंडली के बीच आपसी प्रेम ही ऐसी चीज़ नहीं है जिससे कलीसिय प्रभावित होती हैं परंतु कुछ ऐसी बातें हैं जिनमें बिना प्रेम के बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यह बड़े दुख की बात है कि बहुत सी कलीसियाओं में इस प्रकार का प्रेम मौजूद नहीं है।

यहाँ पर कुछ ऐसे तरीक़े उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से आप मंडली के प्रति अपने प्रेम को बढ़ा सकते हैं तथा उनसे अधिक प्रेम पा सकते हैं।

सही शुरुआत- क्या यह प्रेम हो सकता है?

जब एक पासबान के सम्मुख किसी कलीसिया को सेवा के प्रति बुलाहट की प्रथम दस्तक पहुँचे, तो यह सेवक के लिए उचित समय है कि वह पूछेः क्या यह किसी अद्‌भुत बात की शुरुआत हो सकती है? क्या मैं उस स्थान के लिए उपयुक्त हूँ? क्या यह पहली झलक का

प्रेम है? क्या हमारा मिलाप और संलग्न होना ठीक है?

विवाह के समान, आपका प्रत्येक उत्तर अनोखा व व्यक्तिगत होगा। किसी विवाहित जोड़े से पूछें कि वे कैसे मिले और उन्हें एक दूसरे से कैसे प्रेम हुआ। उनकी कहानी बिल्कुल अनोखी व बहुत सी बार अति हास्यपूर्ण होगी। यहाँ तक कि जिन लोगों का विवाह हुए ५० वर्ष हो चुके हैं वे आज भी अपनी कहानी बताते समय युवकों के समान चहक उठते हैं। जब वे अपनी कहानी को बताए तो शायद उनके रिश्ते के वे भाग, मज़बूत विवाह के लिए बुनियादी तत्व जैसे न सुनाई दें। परंतु सच्चाई यह है कि इसी आधार पर उन्होंने अपने इस रिश्ते को क़ायम किया है। बाहर से देखने वालों को यह कैसा जान पड़ता है वह

अपने लोगों को बताएँ कि उनके पासबान बनकर आप कितने ख़ुश हैं।

इतना महत्वपूर्ण नहीं है।

इसी प्रकार से एक रिश्ते की शुरुआत में पासबान व मंडली के बीच मज़बूत, प्रेम पूर्वक, आत्मिक रूप में एकसा होना अति-आवश्यक है। विवाह के समान यह रिश्ता भी अनोखा होगा। परंतु एक प्रस्तावित पासबान को यह समझना ज़रूरी है कि वहाँ पर एक प्रेमपूर्ण संबंध को बनाकर रखा जा सकता है या किसी नए कार्य को करने की ज़रूरत ही नहीं है।

कहें "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ"

अपने लोगों को बताएँ कि उनका पास्टर होना आपके लिए बड़े सौभाग्य की बात है। मैंने एक ऐसे पासबान के बारे में सुना जो हमेशा अपने पूर्व चर्च के प्रेम से डूबा रहता तथा अधिकतर वहाँ की ही बातें किया करता था। एक बार उसकी वर्तमान कलीसिया के एक व्यक्ति ने कहा 'शायद वह हमसे गुज़र जाने के बाद अधिक प्रेम करेगा'। इसके प्रतिउत्तर में एक निःशब्द प्रतिक्रिया थी 'हो सकता है कि ऐसा जल्दी हो'।

इससे भी उत्तम एक तरीक़ा है। बोले और देखे कि जब आप प्रेम को बाँटते हैं तो कितनी भलाई आपको प्राप्त होती है। आपका प्रत्येक शब्द किसी को यीशु मसीह के प्रेम की याद दिलाता है। प्रत्येक प्रेमदायक शब्द, बदले में आशीष को देने वाला होता है। कलीसिया में से कोई न कोई व्यक्ति पास्टर को वह प्रेम वापस करेगा। और हर एक प्रेम पूर्ण शब्द बोलने वाले के प्राणों को बहाल करता है।

अपने घर तथा अपने अध्ययन के दौरान इन शब्दों का इस्तेमाल करें ताकि आप बिना हिचकिचाहट के साथ कह सकें कि ''मैं आपको परमेश्वर के प्रेम में होकर प्रेम करता हूँ''।

आपको प्रेम करने के लिए उनका धन्यवाद करें

अनेकों पासबान सदैव इस डर में जीवन बिताते हैं कि जैसा शहर के दूसरे चर्चों के लोग उनके पासबान के लिए करते हैं वैसा उनके चर्च के लोग उनके लिए नहीं करते। यह स्वभाव दो मँगनी की अँगूठियों की आपस में तुलना करने जैसा मूर्खता पूर्ण कार्य होगा। क्योंकि कम से कम मूल्य की अँगूठी अधिक से अधिक प्रेम व लगाव को प्रगट कर सकती है।

अन्य लोग यह विश्वास करते हैं कि कलीसिया उनको आदर व सम्मान देने के लिए बाध्य है। अपने जीवन के मध्य में व पासबानों से परे वे विश्वास करते हैं 'कि उन्होंने अपना उधार चुका दिया है' और कलीसिया उनकी वर्षों की सेवा के नीचे ऋणी है। यह झूठे विचार (ख़्याल), बलिदान, आज्ञाकारिता, या क्रूस पर अपने आप के लिए मर जाना जैसा सुनाई नहीं देता।

आप सोचें कि आप कितने धनी हैं- आप राजा की सेवा में लगे राजा की संतान हैं। हम उसके मंच से प्रचार करते हैं तथा उसके कार्यालय में कार्य करते हैं। हम उसके लोगों के बीच प्रत्येक दिन राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम उसके लिए बोलते व उसकी कलीसिया की देखभाल करते हैं। परंतु हम बुद्धिमानी से याद रखते हैं कि हम राजा नहीं हैं। राजा यह कभी नहीं चाहता कि हममें से कोई उठाया या पुचकारा ज़ाए।

आदर के योग्य बनें

प्रत्येक पासबान जानता है कि बाइबल में आत्मिक अगुवों को विशेष आदर देने की शिक्षा दी गई है। पौलुस अपनी दो पत्रियों में हमें आदर देने की प्रेरणा देता है। थिस्सुनिकियों में वह इस प्रकार कहता है 'हे भइयों, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं; और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो (१ थिस्सलुनीकियों ५:१२,१३)।

एक बार फिर से पौलुस आदर बल्कि दुगुना आदर देने का सुझाव देता है: जो प्राचीन अच्छा प्रबंध करते हैं; विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं दोगुने आदर के योग्य समझे जाएँ (१ तीमुथियुस ५:१७)।

'अति महान जोखिम में पासबान' में एच.बी.लन्दन और मैं एक ऐसे सह-अगुवे की कहानी बताते हैं जिसने अपने नए पास्टर को आदर देने में बल्कि दुगुना आदर मुहैय्या करवाने में अपना भरसक प्रयास किया।

लेकिन उसने कलीसिया के परामर्शदाता से पूछा जिसने कलीसिया की नया पासबान ढूँढ़ने में मदद की थी; 'क्या कोई पासबान को यह याद दिलाता है कि आदर करने के संदर्भ में बाइबल का अनुच्छेद दो तरफ़ा है?''

वह विश्वास योग्य सह कार्यकर्ता ठीक कह रहा है। वह अनुच्छेद आदर प्राप्त करने के लिए पास्टर के पहलू को कठिन परिश्रम, कलीसिया की अगुवाई, परमेश्वर के लोगों को फटकारने के रूप में दिखाता है... तथा दुगुना आदर उन लोगों के लिए हैं जो शिक्षा देते व प्रचार करते हैं।

रोज़मर्रा की ज़िंदगी से सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा सेवकाई के लिए अलग किए जाने का डर घटता चला जा रहा है। परमेश्वर को प्रसन्न करने तथा सेवकाई को भले प्रकार

से करने के लिए पुनःनवीन हुए ज़िम्मेदारी के एहसास की ज़रूरत है। इसके साथ पासबानी की सेवा के उत्तरदायित्व के एहसास ने भी हमारी दीर्घकालीन विचार-धारा को आकार देना चाहिए।

बिना शर्त लोगों को प्रेम करें

अनुगृह के पदक के समान लोगों से प्रेम करें। नए नियम की कलीसिया का बुनियादी वह रहस्य प्रेम है जो बिखरे मानवीय रिश्तों को चंगा करता, नाशक ग़लतफ़हमियों को मिटाता, संपूर्ण हृदय से क्षमा प्रदान करता, सच्ची संगति को प्रोत्साहित करता तथा प्रभावशाली गवाही को प्रेरित करता है।

परमेश्वर ने अपनी कलीसिया का निर्माण लोगों के लिए किया, न कि संस्थाओं, धर्म शास्त्रीय विधि, सामाजिक प्रतिक्रियाओं, यहाँ तक कि किसी पासबान के लिए नहीं किया है। वह चाहता है कि कलीसिया लोगों को जीते, उन्हें तैयार करें, और संसार में परमेश्वर की सेवा के लिए शामिल करें।

एक वियतनाम के पासबान ने कहा कि 'भेड़ों का सर्वप्रथम कार्य चरवाहे के जीवन को उलझाना है, और उसे ऐसा करने के लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ती। यदि हम प्रेम करने के लिए लोगों के वह बनने का इंतज़ार कर रहे हैं जैसा हम चाहते हैं तो हमें बहुत अधिक लंबा इंतज़ार करना पडेगा। परमेश्वर के अनुगृह से हमारा लक्ष्य, उन्हें प्रेम करना है चाहे वे जैसी भी परिस्थिति में हो, और साथ ही साथ उनकी क्षमता पर विश्वास करना है।

लोगों की विभिन्नताओं को देखकर आश्चर्य चकित न हों। कुछ लोग उदारवादी, कुछ झगड़ालू; कुछ सज्जन, दूसरे घमंडी, कुछ लोग अद्‌भुत तो कुछ जादूगर, या विलक्षण, कुछ संवेदनशील तो कुछ आत्म केंद्रित, कुछ भरोसेमंद; दूसरे बेकार, कुछ धन्यवादी, कुछ जल्दी बुरा मानने वाले होते हैं। और इन सभी को एक चरवाहे की ज़रूरत होती है जो उन्हें प्रेम करे तथा परमेश्वर का घर तक उनका मार्गदर्शन करे।

सी.एस.लुइस ने विभिन्नताओं में सकारात्मक सम्भवताओं को खोला क्योंकि कलीसिया स्वाभाविक रिश्तों में जुड़ी हुई कोई मानवीय संस्था नहीं, परंतु मसीह की देह है, जिसके भीतर सारे अंगों ने, चाहे वे कितने भी भिन्न क्यों न हों, अपने सामान्य जीवन को अपनी विभिन्नताओं द्वारा एक दूसरे के पूरक बनकर व एक दूसरे की सहायता करते हुए बिताना चाहिए।

कलीसिया लोगों के लिए विद्यमान है। उनमें विश्वास करो। उनकी चिंता करो। उनको उनकी पूरी क्षमता ढूँढ़ने में सहायता करें।

एक दीर्घकालीन संबंध के लिए समर्पित हो

यह कहानी हमारे शहर के एक रविवारीय समाचार पत्र से है। एक व्यक्ति से जिसकी उम्र इस समय ८० वर्ष की है उसकी ६७ वीं शादी की वर्षगाँठ पर यह प्रश्न पूछा गया कि 'अपने से जवान पतियों के लिए आपके पास क्या सलाह है?''

उन्होंने उत्तर दिया 'आपको उस कार्य को लगातार करते रहना होगा जो आपने अपनी पत्नी के दिल को जीतने के लिए पहली बार किया था' पास्टर के अपनी कलीसिया के प्रति प्रेम को लेकर इस सलाह में कुछ बहुत अच्छी व लाभदायक बातें हैं।

परंतु उस समय क्या करें जब प्रेम का एहसास समाप्त हो चुका हो? एन लॅन्डर ने एक बार अपनी एक पाठक को सलाह दी 'प्रेम करते रहो और एहसास अपने आप पैदा हो जाएगा।''

प्रेम का प्रचार करें

बाइबल की ओर वापस जाकर अपने मन को प्रेम पर आधारित अनुच्छेदों को पढ़कर भरें। अपने लोगों को बार बार सिखाएँ कि हमारा आपसी प्रेम, स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के प्रेम के तहत बढ़ता है। उन्हें दिखाएँ कि प्रेम परमेश्वर की ओर से मिला हुआ वह वरदान है जो हमें अपने चारों ओर के लोगों को प्रदान करना है। अपनी कलीसिया में ऐसे आत्मिक माहौल को बनाने का प्रयास करें जो बाइबल अनुसार चुनौतियों को पूरा करता हो; 'देखो कि मसीह ने हमसे कैसा प्रेम किया। उसका प्रेम मुफ़्त, प्रदान करने वाला था। उसका प्रेम हमसे कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं परंतु हमारे लिए खुद को कुर्बान कर देने वाला था। ठीक तरह प्रेम करो।'' (इफिसियों ५:२)

चाहें आसान हो या मुश्किल, एक पासबान व उसकी मण्डली के बीच प्रेम का सम्बन्ध होना अति आवश्यक है क्योंकि कलीसिया का प्रभावशाली होना सेवक व मंडली के बीच स्वस्थ सम्बन्धों पर आधारित होता है।

एक संपूर्ण व्यक्ति बनें

चरित्र मान्यता रखता है। आत्म दयनीयता अपेक्षित होती है। जैसे मेरा अस्तित्व मेरे कामों से पहले आता है उसी प्रकार चरित्र हमारे आचरण का सोता है। अधिकतर मंडलियों से पूछा जाय कि वे कुशल या पवित्र अगुवे में से किसे चुनेंगे, तो वे पवित्र अगुवे को चुनेंगे।

इस अनापेक्षित अनहोनियों तथा टूटेपन के दौर में, कई बार कलीसिया चोटिल, भ्रम में बड़े, उलझे हुए लोगों के लिए आखिरी जगह बन जाती है। और उन्हें इस शरणास्थान में स्वागत मिलता है। जिसके परिणामस्वरुप बहुत से लोगों को मसीह में एक दम नया जीवन, जो नई शुरुआतों से रूपांतरित जीवन प्राप्त होता

है। परंतु इस प्रक्रिया में कुछ लोगों को निरंतर समस्याएँ होती हैं या कोई आदत, एक निशान या किसी दाग़ या किसी रहस्यमय पाप का सामना करना पड़ता है।

टूटेपन की चंगाई करने हेतु प्रत्येक सैकंड परमेश्वर पर आधारित होना ज़रूरी है। यदि कोई पास्टर मानवीय सामर्थ्य पर भरोसा करके सेवा करने का प्रयास करता है तो उसके पास देने के लिए डॉक्टर, इंजीनियर या अभिकर्ता से अधिक कुछ नहीं होगा। परंतु हमारे जीवन में कुछ विशेष बातें- परमेश्वर का अनुग्रह, उसकी उपस्थिति तथा परमेश्वर की सामर्थ, पाई जाती है, जो हमें जयवन्त तथा प्रभावशाली व लोगों को यह समझाने में मदद करता है कि जो हम प्रचार करते हैं वह विश्वसनीय तथा सत्य है।

पौलुस इस सामर्थी वाक्य में संपूर्ण होने के मामले का वर्णन करता हैः वचन, और चाल चलन, और प्रेम और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा तथा पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह। (१ तिमुथियुस ४:१२,१३)

अपनी मण्डली पर अनुग्रह करें: अपने आप को पहचानने का प्रयास करें

आप कैसे सोचते हैं? आपकी प्रतिक्रियाएं कैसी होती हैं? आपके जीवन की चालक शक्ति क्या है? आपके लक्ष्य क्या है?

दूसरों को समझने के लिए खुद को समझना एक महत्वपूर्ण कुँजी है। अपने उद्देश्य के प्रति प्रश्न करें **'मैंने ऐसा क्यों किया?'** किस तरीके से आपने किसी सभा का संचालन किया, उस पर पुनःविचार करें। किस तरह आप पैसा खर्च करते हैं उसे जाँचें? ये सारी बातें आपके चरित्र को बहुत हद तक प्रगट करती हैं। यदि आपने प्रशासनिक कामों में आपकी ही इच्छा पूरी करने का प्रयास किया तथा धर्मी ठहरने के लिये, यह दिखाने का प्रयास किया कि वह परमेश्वर की इच्छा थी, तो दृढ़ संकल्प करने के लिये खुद से प्रश्न करें।

बुलाहट को ईश्वरीय काम समझें

प्रेरित पौलुस ने अपनी बुलाहट को ईश्वरीय कार्य माना। उदाहरण के लिये उसने गलतियों में कहा, ''परन्तु परमेश्वर की जिसने मेरी माता के गर्भ से ही मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करें कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ, तो मैंने माँस और लहू से सलाह नहीं ली।

क्या उद्घोषणा है। प्रेरित पौलुस की अपनी बुलाहट की निश्चितता को देखें; उसके जन्म लेने से पूर्व सेवा के लिए अलग किया गया, परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बुलाया गया; जब प्रभु यीशु मसीह उसके जीवन व सेवकाई में प्रगट हुआ तो आनंद व प्रमाणिकता थी; वह अन्य जातियों के लिए ईश्वरीय रूप में बुलाया गया; और शायद उस समय के यहूदियों के लिए भी।

ईश्वरीय बुलाहट सेवकाई के लिए बल, सामर्थ्य तथा प्रेरणा प्रदान करती है। यह हमारी मिशन कार्यों के प्रति रुचि तथा पवित्र योग्यता को बढ़ाने में सहायता करती है; ताकि परमेश्वर का जन जितना सोचता है या प्रयास करता है उससे अधिक बढ़कर कार्य कर सके। अपनी बुलाहट के अनुसार जीवन निर्वाह किए जाने से हमें प्रचार करने, धीरज धरने तथा उन सभी लोगों को प्रेम करने अर्थात सारी मानव जाति को प्रेम करने की सामर्थ मिलती है।

जीवन का एक अंग मानकर सेवकाई का आनंद उठाएँ

यद्यपि सेवकाई को पेशे या बुलाहट के रूप में देखा जा सकता है परंतु इसके निचोड़ या परिणाम के कारण ही लोग इसे पहचानते हैं। जैसे अभिभावक का कार्य दिन और रात, सालों साल का काम है। इसी प्रकार से सेवकाई हमारे जीवन का हिस्सा व सच्चाई है जिसे हम आनंद के साथ भी स्वीकार कर सकते हैं या इसका इनकार कर इसे लात मार सकते हैं।

बैरागी बनने से इनकार करें

कई बार पासबानों को सिखाया जाता है कि वे विश्वास करें कि उन्हें व्यवसायिक रूप में अकेला ही रहना है। मैं भी इसी तरह सिखाया गया था। इसका अभिप्राय है कि सभी लोगों से एक सीमित रिश्ता रखा जाय तथा किसी को अपने अधिक नज़दीक न आने दें। इस प्रकार की सलाह का कारण यह है कि यदि कोई व्यक्ति आपके नज़दीक आता है तो दूसरे लोग इससे जलेंगे। और यदि लोग आपके ज़्यादा नज़दीक आ जाते हैं तो जब आपके प्रस्थान का समय आएगा तो वह आपके हृदय को तोड़ देंगे।

सच में यह तर्क हास्यप्रद दिखते हैं, है ना?

मेरी प्रथम पासबानी के आख़िरी दिन में, मैंने अकेलेपन के रीति रिवाज़ का अनुसरण किया। मैंने घोषणा की 'हम परमेश्वर की इच्छा में होकर नई जगह के कार्यभार को सँभालने जा रहे हैं। इसका अर्थ है कि हम वहाँ पहुँचकर कोई फ़ोन या पत्र या कार्ड न तो भेजेंगे और न ही प्राप्त किया जाएगा।

कलीसिया की एक वृद्ध स्त्री ने मेरी इस स्थिति को अजीब जाना। हमारे नए सेव काई के क्षेत्र में पहुँचते ही, हमारी प्रथम संतान का जन्म हुआ। उसके जन्म के २ हफ़्तों के भीतर हमारे पुराने चर्च से उस वृद्ध महिला के द्वारा हमारे बच्चे को एक पत्र प्राप्त हुआ। जिसमें अनेकों बातों के अलावा लिखा था 'तुम्हारे पिता ने हमसे कह दिया था कि हम उन्हें पत्र नहीं लिख सकते, इसलिए मैं यह पत्र तुम्हें लिख रही हूँ। कृपया अपने माता-पिता से कहना कि हम उन्हें प्रेम करते हैं और हमेशा करते रहेंगे।''

हो सकता है कि हमारी सेवकाई की निराशा हमारे सामाजिक अकेलेपन में प्रगट हो? हम प्रेम, संगति तथा समुदाय की बातें तो करते हैं परंतु हम में से शंका, छुपाना या निजीपन तथा व्यक्तिगत वाद जैसी बातें प्रगट होती है।

अपने कार्य में परमेश्वर के दृष्टिकोण को खोजें

जब परमेश्वर आपको किसी नई जगह पर भेजता है तो वह उस स्थान के बारे में सब कुछ जानता है और वह आपकी योग्यताओं, पृष्ठभूमि, तथा क्षमताओं को भी जानता है। जब किसी ऐसे कार्य की पेशकश होती है या आप उस काम को स्वीकार कर लेते हैं जो परमेश्वर की इच्छा के अन्तर्गत लगता हो, तो अपने आप से

अवश्य पूछें कि परमेश्वर आपसे इस स्थान में क्या करवाना चाहता है। जब परमेश्वर आपको कहीं भेजता है तो आपको तब तक वहाँ रहना है जब तक उसकी योजना पूरी नहीं हो जाती।

सपनों, कल्पनाओं व रचनाओं को आपस में बाँटें

कलीसिया ज़्यादातर अपने रीति रिवाज़ों में बँधी महसूस होती है। जबकि अद्‌भुत बल्कि मज़े की बात, तथा सच्चाई यह है कि जिन बातों को आज हम परंपराओं के रूप में मानते वह पहले के जमाने में नए साहसिक कार्य थे। सण्डे स्कूल का इतिहास, आधुनिक मिशन, सभा का सुबह ११ बजे प्रारंभ करना, किसानों को कलीसिया में आने से पहले अपने कार्यों को ख़त्म करने का समय देना, ये सब उन दिनों में होने वाले नए परिवर्तन थे। और हो सकता है कि उस समय के लोग कहते होंगे 'हमने ऐसा पहले कभी नहीं किया।''

सेवकाई में भूतकाल, वर्तमान व भविष्य में संतुलन बनाए रखना कठिन कार्य है। हर एक कलीसिया और व्यक्ति अपने इतिहास के द्वारा आकार पाते हैं। परंपराओं को तवज्जों दी जानी चाहिए, और कई बार परिवर्तन धीरे-धीरे आता है। जबकि वर्तमान महत्वपूर्ण व भविष्य परमेश्वर के वचनों की तरह उज्ज्वल है।

बहुत से सेवक अपना जीवन भविष्य की आशा करते-करते बिता देते हैं जो कभी नहीं आता। बहुत से वर्तमान में बिना पिछली बातों पर विचार किए हुए कि क्या था और भविष्य में क्या हो सकता है, अपना जीवन जीतें हैं। उनके अधिकतर काम पेड़ से टूटे फूल के समान- देखने में सुंदर परंतु बिना जड़ के होते हैं। एक अच्छा इलाज भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य को इतिहास, आशा, तथा उपलब्धि के जैसे सोचना और उन कालों की रचनात्मक बातों को अपने मन में बसाए रखना है। परमेश्वर के साथ भागीदारी करते हुए प्रत्येक सेवकाई का दिन एक उत्तम दिन होता है बशर्ते हमें यह पता हो कि हमें उस दिन क्या करना है।

महान लोगों को पैदा करें

दशकों से, कलीसिया की बढ़ोत्तरी व सुसमाचार प्रचार की प्रयोजनाओं ने महान कलीसिया के उत्पन्न होने का मार्ग प्रशस्त किया है। क्या ऐसा हो सकता है कि जब एक कलीसिया के अंदर महान लोग खड़े होते हैं- तो उनके परमेश्वर के साथ व आपसी संबंधों के परिणाम स्वरूप कलीसिया में बढ़ोत्तरी होती है?

प्रोत्साहन देने के द्वारा महान लोगों को, महान कार्य के प्रति समर्पित होने के लिए तैयार करें। एक कवि ने कहा 'एक महान कार्य के लिए खुद को चढ़ा दो'। आप शायद उस काम के लिए बहुत भलाई प्रगट न कर सके, परन्तु वह कार्य आप पर बहुतायत से भलाई प्रगट करेगा।

मज़बूत व कुशल लोगों को इस्तेमाल किये जाने में कमी तथा हर सेवकाई व योजना को नियन्त्रित करने की इच्छा में दो ऐसे प्रमुख तत्व शामिल हैं जिनके कारण कलीसिया छोटी रहती है।

जब लोग कलीसिया में आते हैं तो आप उन्हें आदर दें

हर एक सभा में आने वाले लोगों को प्रत्यक्ष व सदृश्य रूप में लाभ प्राप्त होना चाहिए। जब कोई व्यक्ति कलीसिया में आता है तो उसे, वचन पाने, प्रोत्साहन प्राप्त करने तथा प्रेरणा पाने का पूरा अधिकार है। लोगों को आदेश, प्रेरणा, प्रोत्साहन, और आशा की आवश्यकता है। लोगों को डाँट, बेइज़्ज़ती, या निंदित होने की ज़रूरत नहीं है। ये सारी बातें संसार व रोज़मर्रा की ज़िंदगी में होती ही रहती हैं। किसी भी कलीसिया के भीतर संख्या में ज़बरजस्त उछाल आ सकता है यदि हम सभा को संबद्धता शील, अधिक प्रेरणादायक, और कम उदासीन बनाएँ। जब भी कभी आप सभा के लिए तैयार होते हैं तो खुद से पूछें, कि कलीसिया में अगले हफ़्ते लोग मिलने पर क्या ग्रहण करना पसंद करेंगे?

संकट से तड़पते लोगों में प्रेम ले जाएँ

हानि, दुर्घटना, बीमारी या टूटापन कभी न कभी हर मनुष्य के जीवन में आता है। इस प्रकार के संकटमय व तनावपूर्ण समयों में लोगों के साथ यीशु मसीह की जीवित देह के रूप में खड़े होना मसीहीयत सेवकाइयों का असली हृदय है। वहाँ मौजूद हों। प्रेम के साथ जाएँ और तब तक जाते रहें जब तक वह संकट ख़त्म न हो ज़ाए। जो लोग उस दुख की घाटी से होकर गुज़र रहे हैं वह आपको हमेशा याद रखेंगे। जब दूसरे लोग आपको लोगों की समय पड़ने पर सहायता करते हुए देखेंगे, तो अपने आप संपूर्ण कलीसिया में सेवकाई की विश्वसनीयता बढ़ जाएँगी।

परमेश्वर की ओर से प्रेम के उपहार के रूप में मसीही सेवा को अपने हृदय में बसाए रखें

आज, बहुत से लोग जो कलीसिया में जाते हैं इधर उधर आत्मिक अल्प आहार खाने तथा उपयुक्त मात्रा में मांस व ठोस पदार्थ न खाने की वजह से अति मोटे हो गए हैं। उन्हें परमेश्वर व लोगों की अधिक सेवा करने में अभ्यास करने की आवश्यकता है।

मसीही सेवा के तीन महत्वपूर्ण तत्वों से अनेको सम्भावनाएं लिपटी हुई है। इनके बारे में ठीक तीन पायों वाले स्टूल के जैसे सोचें। प्रथम, हम जो कुछ परमेश्वर के लिए करते हैं,

वह परमेश्वर की सेवा है। दूसरा, जो कुछ हम दूसरों के लिए करते हैं, वह सेवा है। तीसरा, एक नज़रअंदाज़ किया जाने वाला अंग यह है- जब हम दूसरों की सेवा करता है तो हम व्यक्ति रूप में संपन्न हो जाते हैं।

प्रचारक परमेश्वर के लिए प्रचार करते हैं ताकि लोग परमेश्वर को बेहतर जान सकें। परंतु जब वह प्रचार करता है परमेश्वर का वचन उसे परखता है और वह इस प्रक्रिया के तहत बड़े प्राण को विकसित कर लेता है।

सण्डे स्कूल का अध्यापक परमेश्वर के लिए लोगों को उनके जीवन में परमेश्वर के वचनों का अभ्यास करना सिखाता है; और उसके साथ-साथ अपने आत्मिक जीवन में भी उन्नति करता है। यह दृष्टिकोण सेवा के कार्य को बाध्यता या कर्तव्य से अवसर व आशीष में बदल देता है।

मज़बूत लोगों को ग्रहण व इस्तेमाल करें

अनेकों पासबानों को कलीसिया के मज़बूत व कुशल लोगों से डर लगता है। बहुत से लोगों को किसी के प्रश्न पूछे जाने से अच्छा नहीं लगता। अन्य आत्मिक अगुवे मज़बूत लोगों के उद्देश्यों पर प्रश्न करते हैं। विशेषकर उनके बारे में जो हर काम अति उत्तमता व प्रभावशाली ढंग से करना चाहते हों। मज़बूत व कुशल लोगों को इस्तेमाल किए जाने में कमी तथा हर सेवकाई व योजना को नियंत्रित करने की इच्छा में दो ऐसे प्रमुख तत्व शामिल हैं जिनके कारण कलीसिया छोटी रहती है। मंडली के प्रत्येक कार्य को नियंत्रित करने की ज़रूरत बढ़ोत्तरी को रोकती तथा मनोबल की जड़ें काट देती हैं।

परमेश्वर के परिवार की अगुवाई करें

शारीरिक परिवार ख़तरनाक अवरोध में पडे हैं। लगभग प्रत्येक जन को अपने परिवार को मज़बूत बनाने के लिए सामर्थ की ज़रूरत है। कुछ लोगों को उस परिवार की आवश्यकता है जो उनके पास कभी था ही नहीं, वह अपना परिवार खो बैठे हैं। बहुत से लोगों के दिल टूटे हुए हैं। एक प्रिय कलीसिया की दोस्ती, स्वीकार किया जाना, सहायता और जवाबदेही, आज पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। परमेश्वर के परिवार की अगुवाई करने के अपने अवसर को आप चाहें जो नाम दें; दल का मुखिया, खोए हुए परिवार का अगुवा, वैकल्पिक परिवार का संस्थापक, या परमेश्वर के परिवार का पासबान। परंतु ध्यान रहे कि काम पूरा हो तथा ख़्याल रखने वाला संबंध बना रहे।

सेवकाई प्रेम करने व प्रेम पाने का बहुमूल्य अवसर प्रदान करती है

याद करें कि जब आप बुलाए गए थे तो आप कौन थे? याद करें कि परमेश्वर ने किस प्रकार आपके प्रेम का इस्तेमाल आपको संसार की ज़रूरतों को दिखाने के लिए किया? वह आपकी सेवा के लिए कितना यादगार क्षण था। उस दिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आपको अज्ञात क्षेत्रों में जाने की आज्ञा, यह प्रतिज्ञा करते हुए दी कि वह आपके साथ होगा, शक्ति देगा, और बिना शर्त वह आपको प्रेम करेगा।

अनेकों वचन हमारी सेवकाई के कार्यों को समझने में मदद करते हैं। जबकि दूसरे वचन हमें लक्ष्यों व ज़रूरतों के साथ चुनौती व शक्ति प्रदान करते हैं। सेवकाई के हर मक़सद, तरीक का अर्थ प्रेम है।

प्रेम की महत्वता तथा प्राथमिकता प्रभु यीशु मसीह से पूछें गए एक प्रश्न के जवाब में स्पष्ट दिखाई देती है 'सबसे बड़ी आज्ञा क्या है?'' यीशु ने उत्तर दिया, 'तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य बात तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'' इसके पश्चात् वह सारा सारांक्ष व्यक्त करने वाला वाक्य कहता है 'ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।' यीशु पड़ोसियों से परमेश्वर के जैसे प्रेम करने को महत्वपूर्ण मानते थे।

पौलुस ने भी परमेश्वर का अनुसरण करते हुए लिखते समय प्रेम को हमारे सारे कार्यों का केंद्र बिंदु बताया, 'प्रेम सब बातें सह लेता है, सब बातों को प्रतीति करता है, आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है'' (१ कुरिन्थियों १३:७)

इन अनुच्छेदों को पढ़ने के पश्चात् प्रमाण अविवादित है- सेवकाई का अर्थ परेमश्वर, पड़ोसी तथा स्वयं के लिए प्रेम है। परमेश्वर व पड़ोसी के लिए यह प्रेम हमें, निजी व सार्वजनिक तथा आनंदमय और दुखी स्थानों हेतू जीवन काल का टिकट देता है। यीशु के प्रति प्रेम हमें, विवाह, दफ़नाने के समय, बपतिस्मा में, अस्पताल के प्रतीक्षालय में, प्रभु भोज की सभा में, अराधना और प्रचार के समय उसका प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्रदान करता है। सेवकाई का आनंद और जोखिम बार-बार निम्न शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाना चाहिए, जैसे अति आनंदमय, ख़ुशी, सौभाग्य या अवसर, शांति तथा अनंत निर्माण।

जितने परमेश्वर के कार्यों को लोग अपने पूरे जीवन में देखते हैं एक पासबान उससे अधिक कार्यों का एक हफ़्ते में देख लेता है। मसीह का प्रेम हमारा सेवकाई पर ध्यान लगाने में सहायता करता है। यदि प्रेम जीवन में कम होता हुआ नज़र आ रहा हो, तो सच्चे ढंग से अपनी परख करें और प्रेम पुनः फूलने लगेगा।

परखने का अर्थ है कि यदि आप के ज़्यादातर लोग आपको प्रेम नहीं करते फिर भी आपको उन्हें प्रेम करना है क्योंकि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।

अपनी सेवकाई को अपनी बाहों में थाम लें। जो लोग परमेश्वर ने आपको सौंपे हैं उन्हें प्रेम करें और बदले में वह आपको आपकी सोच से भी बढ़कर प्रेम करेंगे। ■

नेल. बी. वाइसमैन, एक लेखक, वक्ता और शिक्षक है वह स्मॉल कलीसिया केंद्र के संस्थापक व अधीक्षक हैं। वह ओवरलैण्ड पार्क, कैनसास में रहते हैं।

डी.एल. मूडी
तथा
उन्नीसवीं शताब्दी का भव्य सुसमाचार प्रचार

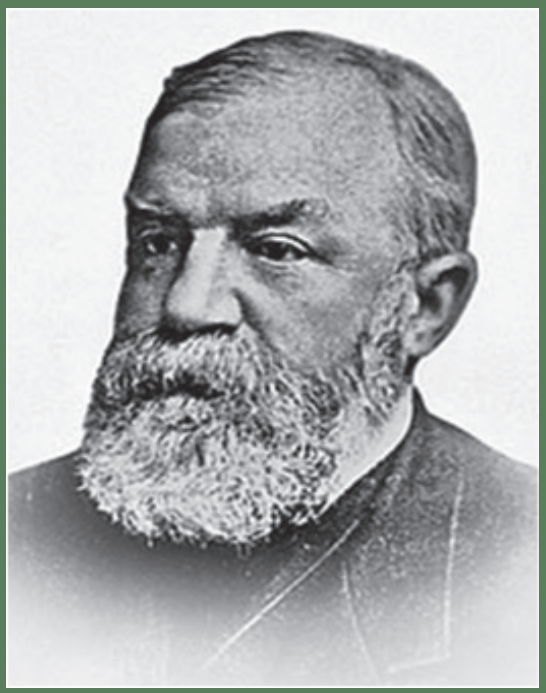

मूडी के पास धर्मशास्त्र का ज्ञान था, परन्तु उन्होंने उसे सरल बनाये रखा। उन्होंने इसका वर्णन तीन आर का इस्तेमाल करके किया: पाप के द्वारा नाश हुए, लहू के द्वारा छुड़ाये गये तथा पवित्र आत्मा के द्वारा पुन: जन्म प्राप्त किया।

लेखक: विलियम फारले

१८७१ में सारा कुक व श्रीमती हावक्स बर्सट उस कलीसिया में गये जहाँ ३४ वर्षीय मूडी पासबान थे। उसकी उत्सुकता व गम्भीरता के बजाय, इन स्त्रियों को ऐसा लगा कि उसमें किसी महत्वपूर्ण चीज़ का - आत्मिक शक्ति का अभाव है। अतः वह प्रथम पक्ति में बैठकर प्रार्थना करने लगीं।

उन्होंने अपने दिल की बात को मूडी से कह दिया, और उसके साथ मिलकर आत्मिक शक्ति के लिए प्रार्थना की। एक दिन वह 'अनेकों रोते तथा सिसकियाँ लेते हुए लोगों के बीच फर्श पर लुड़कते हुए परमेश्वर को उसे पवित्र आत्मा व अग्नि से बपतिस्मा देने के लिए दोहाई देने लगा'।

मूडी ने अपनी सभाओं का आयोजन स्वयं में पाये जाने वाली प्रभावशाली व्यापारिक कुशलताओं के साथ किया।

न्यूयौर्क में व्यापार के दौरान, पवित्र आत्मा का सामर्थ हम पर उतरा। यहाँ पर हम मूडी के द्वारा दिया गया वर्णन देखते हैः एक दिन, न्यूयोर्क शहर में- वाह, क्या दिन था!- मैं सच में उस दिन का सही वर्णन नहीं कर सकता, मैं बहुत कम उस घटना का जिक्र करता हूँ; यह वास्तव में एक भयावह अनुभव था। पौलुस के जीवन में भी एक ऐसा ही अनुभव था जिसका जिक्र करीब १४ वर्षों तक उसने किसी से नहीं किया। और मुझे अपने जीवन में उसके प्रेम का वह अनुभव हुआ जिसके कारण मुझे परमेश्वर से उसके हाथ को हटाने के लिए कहना पड़ा।'' मूडी निश्चय रूप में समझता था कि यदि परमेश्वर अपने हाथ को नहीं हटाता तो, वह मर ही जाता।

कुछ महीनों के पश्चात् अर्थात १८७३ में उसने ब्रिटिश टापूओं पर एक प्रचार का दोरा लगाने की योजना बनायी। उसके साथ उसके नये मित्र तथा अराधना के अगुवे, ईरा शैंकी आये। मूडी प्रचार करने लगा, और कुछ परिवर्तन दिखाई दिया। उन्होंने ध्यान दिया कि 'संदेश फर्क नहीं थे। 'मैंने किसी नई सच्चाई को प्रस्तुत नहीं किया फिर भी बहुत से लोगों ने प्रभु को स्वीकार किया और अपनाया'। मैं जहाँ पहले था मैं वहाँ नहीं जा सकता, यदि कोई मुझे सारी दुनिया भी दे दे- वह उस क्षण की तुलना में धूलि के छोटे कण के समान है।

इस तरह से डी.एल. मूडी की आत्मा की सामर्थ्य से भरी सेवकाई का आग़ाज़ हुआ। उसकी इंग्लैण्ड यात्रा से पूर्व, उसे बहुत कम लोग जानते थे। परन्तु इग्लैण्ड के पश्चात् बहुत अधिक संख्या में लोगों ने उसकी सामर्थ्यपूर्ण सेवकाई का आनन्द उठाया। जब वह अमेरिका वापस आया, वह एक अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात व्यक्ति था।

उसके कार्यों में परमेश्वर की इतनी सामर्थ्य पायी जाती थी कि कुछ लोग तो इसे 'तीसरी महान जागृति' कहने लगे। अगले करीब पच्चीस वर्षों तक वह अंग्रेजी भाषा के जानकार देशों में जाकर प्रचार करता रहा। उसने करीब दस करोड़ लोगों में प्रचार किया, स्कूल व कॉलेजों का निर्माण किया, और १९वीं शताब्दी के प्रचार जगत में अपनी छवि छोड़ी। उसका जीवन तारीफ के काबिल था। उसने बिना उच्च शिक्षा प्राप्त किये, विजयी मसीहीयत को नया रूप प्रदान किया। बिना रेडियो और टेलीविजन के उसने दस करोड़ लोगों में सुसमाचार सुनाया।''

वह दौर (समय)

थोमस द्वारा लीखित 'संसार का इतिहास' एक महान शख्स की जीवनी है। इस दृष्टिकोण से, उन्नीसवीं शताब्दी के मसीही इतिहास को बिना डी.एल. मूडी के जीवन पर नज़दीकी निगाह डाले हुऐ तब तक नहीं सराह सकते जब तक हमें उस दौर (समय) की, जिसमें मूडी रहा भली प्रकार से जानकारी न हो।

मूडी का जन्म कृषक जगत में हुआ, जो १००० वर्षों में थोड़ा परिवर्तित हुआ था। दूसरे शब्दों में, वह ज़बरजस्त परिवर्तन के दौर में रहा। शहरों की संख्या बढ़ने की वजह से कृषक कार्य निरन्तर कम होता चला गया। १८९९ में उसकी मृत्यु तक, अमेरिका, एक औद्योगिक राष्ट्र बन गया। उसकी पीढ़ी टेलीग्राफ, रेलरोड, भाप से चलने वाले पानी के जहाज, तथा किटाणु व बैक्टीरिया की खोज की गवाह थी।

यह दौर उस समय की धर्म शिक्षाओं के भी बदलने का समय था। मैथोडिस्ट के सैन्यकरण (आर्मीनियानिजम) ने कॅल्विन्स की, अमेरिका के नए अंग्रेजी फादर की 'रुढ़िवादिता' पर कब्ज़ा कर लिया था। मूडी के जीवन के अन्तिम दशकों में उसने, मिलेनियलिज़्म-पूर्व के आगाज़, केसबिक के जीवन में शुद्धता के सिद्धान्तों को बढ़ते, पवित्र आत्मा में नवीन रुचि को बढ़ते, तथा पवित्रता के आन्दोलन के आरम्भ को देखा।

मूडी का व्यक्तित्व इस ज़बरजस्त बदलते संसार में बिल्कुल उपयुक्त था। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो वह बदलते अमेरिका में एक जवान पासबान था। जोर्ज मार्सडन कहते हैं कि वह व्यापार में सफल 'होराटियों एल्गर' जैसा व्यक्तित्व था। 'विनम्र परिस्थितियों में जन्मा एक लड़का जो अपनी कल्पना और हिम्मत के बल पर, सफलता प्रसिद्धि की बुलन्दियों पर पहुँच गया।'' इस नजरिये से वह अपने 'युग का पुरुष था'।

जीवनी

मूडी का जन्म १८३७ में नौर्थफील्ड के मैसचेस्ट में हुआ। ४ वर्ष की आयू में उनके पिता का देहान्त हो गया। उनकी गरीब माँ ने बडे कठिन संघर्ष के बाद मूडी व उसके सात भाई, बहनों का पालन-पोषण किया तथा परमेश्वर की शिक्षाएं दीं, जो बाद में उनकी बुलाहट में कारगर साबित हुईं। एक पिछडे गाँव मॅसचेस्ट में उन्होंने अपनी ग्रेड स्कूल से थोड़ा ही ज़्यादा शिक्षा प्राप्त की। उनकी माता ने उन्हें यूनिटेरियन चर्च में बपतिस्मा दिलवाया।

१८५४ में १९ वर्ष की आयु में मूडी बोस्टन चले गये, जहाँ पर वह एक जूता बेचने वाले की नौकरी करने लगे। वह बाहर जाने वाले, आत्मविश्वासी, परिश्रमी व आशावादी थे। बोस्टन कोंगरिगेशनल चर्च, के सण्डे स्कूल के अध्यापक के प्रभाव में आकर मूडी ने मसीह पर विश्वास किया। दुर्भाग्य से जब मूडी ने चर्च में सदस्यता लेने की कोशिश करी तो वहाँ के अगुवे ने उन्हें सदस्यता देने से मना कर दिया। उसकी यूनिटेरियन पृष्ठभूमि ने उसे पर्याप्त बाइबल की शिक्षा प्रदान नहीं की थी। एक साल बाद उस

चर्च के पुरनियों ने मूडी को कलीसिया की सदस्यता देना स्वीकार कर लिया।

शिकागो ८०,००० नागरिकों वाला, वैस्टर्न फ्रन्टियर पर स्थित, एक चहकता हुआ- तथा व्यापार जगत के अनेकों अवसर सजोने वाला विस्फोटक केन्द्र था। १८५६ में मूडी अपनी किस्मत और अपनी प्रसिद्धी को आज़माने वहाँ गए। वह १९ वर्ष के थे। धनी बनने का दृढ़ संकल्प रखते हुए वह बहुत जल्द ही सफल हो गये। २३ वर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते वह $ ८००० कमाने लगे जो आज के समय में (लगभग $ ८,००,०००) होंगे। वह करीब $ ५,००,००० प्रति वर्ष कमाने लगे। शिकागो में रहते रहते, उन्होंने अपने आप को सण्डे स्कूल के कार्य में सम्मिलित कर लिया तथा YMCA के साथ जुड़ गये- जो एक ऐसी संस्था थी जिन्होंने बोस्टन में उन, पर प्रभाव डाला।

१८६० में मूडी ने अपनी व्यापारिक महत्वाकाक्षाओं को छोड़कर YMCA के साथ बच्चों के प्रचारक के रूप में पूर्ण समय की सेवकाई को ग्रहण कर लिया।

यद्यपि वह अत्यधिक ऊर्जा से भरे हुए थे, फिर भी मूडी को सेवकाई के गुणों की आवश्कयता थी। उनकी प्रारम्भिक सेवकाई में वह एक प्रभावशाली प्रवक्ता थे'', डी.ओ.फुलर का कहना है कि 'एक सप्ताह के मध्य में हुई सभा के पश्चात्, जिसमें मूडी ने कुछ बातों को कहने का प्रयास किया था, किसी ने उसे यह सलाह दी कि वह चुप रहने के द्वारा और अधिक प्रभावशाली ढंग से परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं।

मूडी ने गरीब बच्चों तक पहुँचने के लिए उत्तरी शिकागो की झुग्गियों में एक सण्डे स्कूल खोला। उसकी जीवनी लिखने वाला कहता है कि 'इन कार्यों के प्रति उसकी लगन व दृढ़ संकल्प, अखण्ड था''। उसका कार्य ८०० हाज़री सप्ताह प्रति के साथ बहुत तेजी के साथ बड़ा। जैसे जैसे वह युवक व युवतियाँ बड़े होने लगे, मूडी ने उनकी व उनके अभिभावकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए चर्च की स्थापना की। १८६० के दौरान यही मूडी की मुख्य सेवकाई थी।

१८६२ में, मूडी ने १९ वर्षीय ईमा रेवल से विवाह किया। अपनी कम शैक्षिक योग्यता के चलते, वह आचरण में कड़क तथा सामाजिक व्यवहार में शालीन नहीं थे। जबकि ईमा, सांस्कृतिक व सामाजिक स्तर पर सुलझी हुई व तायी हुई महिला थी।

उनकी संगति में रहकर मूडी ने जल्द ही सामाजिक सभ्यता, व शालीनता को सीख लिया जो आने वाले समय में उसकी सेवकाई के लिए सहायक साबित हुईं। इसके अतिरिक्त, उसने (ईमा) सारे पत्र व्यवहार और पारिवारिक अर्थव्यवस्था की देखभाल की तथा अपने तीन बच्चों का पालन पोषण किया। वह 'मूडी की सफलता का मुख्य आधार थी'।

१८७३ में, उसके पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा प्राप्त करने के पश्चात्, जैसा वह बताते थे, उनकी सेवकाई ने एक नाटकीय मोड़ लिया। जब परमेश्वर की आत्मा पहली बार मूडी पर उतरी वह अत्यधिक घबराया हुआ था। उसने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था और नहीं जानता था कि क्या करें। एक साक्षी का बयान इस प्रकार से है 'एक बड़ा सभागार मूडी की बातों को सुनने के लिए भरा था; जहाँ लोगों पर अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ा। मैं उसी समय शाम की सभा से आया था, जहाँ वर लॉबी, प्रत्येक खड़े होने, बैठने यहाँ तक कि मुख्य मंच की सीढ़ियां भी सभा शुरू होने से आधा घण्टा पूर्व भरी थीं। पवित्र आत्मा ने बड़े सामर्थी ढंग से कार्य किया, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को परमेश्वर के सम्मुख रखते हुए लोगों ने दिल की गहराई से परमेश्वर को पुकारा तथा इंग्लैण्ड की कलीसिया के भाई व बहन लोग, मित्र गण तथा हर संस्था को बिना आमन्त्रण के बोलने व प्रार्थना करने की आज़ादी दी गयी थी। वह ब्रिटिश दौरा ४ महीने बाद लन्दन में समाप्त हुआ। कुछ लोगों का अनुमान था कि इन दिनों में उसने करीब २५ लाख लोगों में प्रचार किया।

''मूडी व शैंकी इस दौरे के पश्चात घर वापस आये, जो दौरा १८७३ से १८७५ तक लगातार चला। जौर्ज मार्सडन का कहना है कि 'वे तो राष्ट्रीय वीर के समान हो गये थे।' क्रूसेड आयोजित करने के ११ प्रस्ताव उत्तरी अमेरिका के ब्रूकलाइन, फिलदिलफिया, न्यूयार्क तथा अन्य मुख्य जनसंख्या केन्द्रों से भी प्राप्त हुए। उसके शेष जीवन काल में लोगों का अनुमान है कि उसने करीबन १,०००,००० मील यात्रा की तथा उमड़ती हुई भीड़ को जागृति से भरे संदेश प्रचार किये।

सावधानीपूर्वक तैयारी, स्थानीय कलीसियाओं का सहयोग, तथा प्रभावशाली व आधुनिक विज्ञापन, मूडी की सेवकाई के मुख्य लक्षण थे। इन कार्यों के द्वारा उसने दूसरों के लिए ऐसे पद-चिन्ह छोड़ दिये जो बाद में २० वीं शताब्दी के महान प्रचारक बिली, ग्राहम तथा अन्य लोगों ने इस्तेमाल किये।

परन्तु मूडी ने प्रचार के अलावा भी काम किये। १८७० के अन्त में, उसकी प्रचारकीय शक्ति कम होने लगी। पूर्ण समय के प्रचारकों को तैयार करने तथा कार्यकर्त्ताओं को ठहराने की इच्छा के साथ उसने मसीही शिक्षा की ओर अपने कदम उठाये। १८७९ में उसने नोर्थफिल्ड के मेसचेस्ट में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला। तथा उसके तुरन्त बाद १८८१ में माउन्ट हरमोन में लड़कों के लिए भी एक स्कूल खोला गया। उसने सेवकों को तैयार करने के लिये

मूडी का जन्म ऐसे दौर में हुआ जिसका निरन्तर शहरीकरण हो रहा था।

शिकागो में एक बाइबल स्कूल खोला।

उसने प्रकाशन (छपाई) के व्यापार में भी अपने कदम रखे। १८८० में मूडी ने अपने साले को अपनी पुस्तकों को प्रकाशिक करने का कार्यभार सौंप दिया। मूडी की लिखी पुस्तकों की सफलता ने उसके साले के छपाई के व्यवसाय को सफल बना दिया। रेवल पब्लीशिंग बाद में आने वाले मसीही प्रकाशन कार्यों के लिए एक आदर्श बन गया।

१८९९ के अन्त में, कॅनसास शहर में एक सभा के दौरान मूडी बीमार हो गये। वह शताब्दी के पूरे होने से कुछ ही सप्ताह पहले, हृदय रोग के कारण, स्वर्गवासी हो गये। पूरे देश में उसके देहान्त का शोक मनाया गया।

मूडी की विशेषता

अगर हम दूसरे प्रचारकों से तुलना करें तो मूडी अनोखे थे। केवल ग्रेड स्कूल के बराबर शिक्षा पाने पर भी उसने लाखों लोगों में प्रचार किया। हाँलाकि उसकी शिक्षा के अभाव के कारण उसे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, वह अपने जीवन भर शब्दों का उच्चारण करने में, वाक्यों को सही ढंग से संघठित करने में तथा सही व्याकरण का इस्तेमाल करने में संघर्ष करते रहे।

एक पुरानी कहावत है अगर कोई व्यक्ति अच्छा पाठक नहीं है, तो वह कभी भी महान व्यक्ति नहीं बन सकता। मूडी इस कहावत से परे थे। प्रतिक्रियाऐं, धर्मविज्ञान को न पढ़ना या ध्यान लगाने में अपना समय न खर्च करना उसके जीवन के विशेष गुण थे। ६२ वर्ष की उम्र में, उसकी मृत्यु से कुछ ही हफ्तों पहले भी वह दिन में छह बार प्रचार किया करते थे। यद्यपि वह बाइबल को बड़े दिल से व ध्यान से पढ़ा करते थे, लेकिन अपने कुछ मित्र लेखकों की पुस्तकों को छोड़ कर जिसमें सी.एच.स्पर्जन, शामिल थे, बहुत कम कलीसियाई इतिहास या धर्म विज्ञान की पुस्तकों को पढ़ा करते थे।

दूसरा उसे कभी भी नियुक्त नहीं किया था वह एक व्यापारी- प्रचारक थे। उसके सारे संगी प्रचारक- वाईट-फील्ड, एडवर्डस तथा फिन्नी नियुक्त किये गए सेवक थे, परन्तु मूडी ने इस परंपरा को तोड़ दिया था। तकनीकी रूप से वह एक सह प्रचारक थे, और उन्होंने हमेशा यह जोर दिया की लोग उन्हें श्रीमान मूडी करके पुकारे।

तीसरा, वह भव्य-क्रूसेड आयोजित करने वाले सर्वप्रथम प्रचारक थे। १८वी शताब्दी में जोर्ज व्हाइट-फील्ड से पहले स्थानिय पासबानों ने अपनी ही मण्डली में प्रचार किया। भ्रमणकारी प्रचारक बेपहचान थे। ऐशल नेटन (१७८३-१८४४) और चार्ल्स फिन्नी (१७९२-१८७५) की सेवाइयों ने, व्हाइट फील्ड के पद चिन्हों का अनुसरण किया परन्तु कभी भी मूडी के समान भव्य समारोह का आयोजन नहीं कर पाये।

मूडी ने अपनी रैलियों के अन्दर अपनी व्यापारिक नीतियों तथा कुशलताओं का इस्तेमाल किया। जब वह किसी शहर में प्रचार के लिए बुलाया जाता तो वह सबसे पहले, सारे प्रोटेस्टेन्ट पासबानों के बीच एकता चाहता, आर्थिक सहायता का पहले ही इन्तेजाम करता, शहर के अन्दर घर घर जाकर खबर करना, और कई बार प्रचार के लिए सहमत होने से पूर्व वह उचित इमारत का निर्माण करने की माँग करता था। उसका दल हर चीज का इन्तेजाम पहले से ही कर दिया करता था। कुछ भी बाद के लिए नहीं छोड़ा जाता था। उसकी सेवा के अन्तिम वर्षों में पवित्र आत्मा का बहाव अधिकांश नदारत था।

चौथा, जबकि उन्नीसवीं शताब्दी के सभी प्रचारक किसी न किसी संगठन के हिस्सा थे परन्तु मूडी कभी किसी संगठन के भाग नहीं हुए। वह उनका विरोधी नहीं थे। बल्कि उसने अपनी उदासीन स्थिति का इस्तेमाल करते हुए अपने व विषम मसीही संगठनों के बीच सेतू बनाने का प्रयास किया। जिन लोगों के बीच वह सेवा करता था उनके बीच उसकी सेवकाई ने एकता के भाव को बढ़ावा दिया।

उसके पद चिन्ह

बहुत से महान पुरुषों के समान, मूडी ने भी कलीसिया पर गहरा प्रभाव डाला। सर्वप्रथम उसके जीवन ने एक प्रचारक के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदल दिया। उसके उदाहरण ने लोगों के दिमाग में धर्म विज्ञान तथा सुसमाचार प्रचार के विभाजन को प्रोत्साहित किया। उसने कहा 'जब कोई व्यक्ति किसी चीज को महत्वपूर्ण समझता है, तो दूसरे लोग भी उसका महत्व जानते हैं' उसके १२ वाक्य ऐसी छवि को छोड़ते हैं जिसके कारण धर्म विज्ञान व सच में मसीही जीवन के अनुभवों में जीने को बिल्कुल भिन्न विषय करके देखा जा सकता है। उसके जीवन और सेवकाई ने इस विचार को प्रोत्साहन दिया कि सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए आलोचनात्मक विचार महत्वपूर्ण नहीं है।

दूसरे लोगों के समान मूडी के भी अपने धार्मिक सिद्धान्त थे जिन्हें उसने बहुत सरल बनाये रखा। वह इन सिद्धान्तों का निचोड़ तीन R का इस्तेमाल करते हुए निकालते हैं; पाप द्वारा नाश हुए, लहू द्वारा छुटकारा पाया, तथा पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ पाये।

मूडी ने बाइबल स्कूलों को भी प्रचलित किया। सेमिनरी के सन्दर्भ में, बाइबल स्कूल के अन्दर कलीसियाई इतिहास, धर्म विज्ञान के पूर्व अध्ययन तथा मूल भाषा के ज्ञान को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था। जिसके परिणाम स्वरूप ज़्यादा जोर 'मैं और मेरी बाइबल' पर था।

मूडी की सेवकाई ने मसीही कार्यों में नई भावनाओं को भी उत्पन्न किया। बहुत सी बार उसने भावुक विषयों को लेकर प्रचार किया। उसके सन्देश सरल, गम्भीर तथा बिल्कुल सीधे हुआ करते थे। घरेलू बातें, साधारण प्रोत्साहन, तथा उसके अपने व्यक्तिगत जीवन की झांकी उसके सदेशों की विशेषताऐं थी। उसकी शैली पुराने प्रचार शैली से भिन्न थी, जिसने लोगों को परमेश्वर की ओर जाने का आग्रह किया। फिर भी, उसकी सेवकाई में पवित्र आत्मा ने हजारों हृदयों को परिवर्तित कर दिया।

मूडी की सेवकाई ने समाज व कलीसिया में अनन्त योगदान दिया। उसने प्रचार कार्यों, कलीसिया की एकता, तथा इन्टर-डिनोमिनेशनल सेवकाईयों में सह कार्यकर्त्ताओं को सम्मिलित होने की प्रेरणा दी।

मूडी एक औसत वक्ता थे जिन्हें अपनी सेवा में औसत से अधिक परिणाम इसलिए प्राप्त हुए क्योंकि परमेश्वर की सामर्थ उनके साथ थी। जिसके परिणाम स्वरूप बहुत से लोगों ने डी.एल. मूडी पर नहीं बल्कि मसीह पर विश्वास किया। उसकी सेवकाई ने यह याद दिलाया कि मनुष्य को अपनी जरूरतों के लिए सदैव पवित्र आत्मा की सामर्थ की आवश्यकता है।

बहुत से मसीही कार्यकर्त्ताओं, के समान मूडी की सवकाई ने कलीसिया को अनेकों अदृश्य तरीकों से प्रभावित किया। मूडी ने गहराई से एफ.बी. मेयर को प्रभावित किया। मेयर ने अपनी नयी प्रचारकीय गर्मजोशी के साथ, विल्बर चैपमैन, को प्रभावित किया। चैपमैन ने बिली सण्डे की सहायता की जिनका मोर्दकाई हाम के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हाम ने उत्तरी कारोलिना में एक जागृति सभा के दौरान, बिलि ग्राहम की मसीह में अगुवाई की। परमेश्वर ने रहस्यमय तरीकों से कार्य किया और डी.एल मूडी की सेवकाई निरन्तर इन सच्चाइयों को हमारे सम्मुख रखती रही।

वास्तव में, इतिहास इसकी कहानी है। ■

विलियन पी फेरले, वाशिंगटन, स्पोकेन में ग्रेस क्रिश्चियन फेलोशिप के पासबान हैं वह *फौर हिज ग्लोरी, पिनाकल प्रेस, आउटरेजस मर्सी,* व *बेकर* नामक पुस्तकों के लेखक हैं। आप उन्हें ७०९-४४८-३९७९ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मज़बूती से समाप्त करना

मैं जब २९ वर्ष का था तब मैंने प्रचारकार्य शुरू किया। प्रथम दो वर्षों में मैंने कुछ ऐसी बातों को सीखा जो मेरे कोलेज या सेमिनरी पाठ्यक्रम में नहीं सिखायी गईं। इसके लिए मैं अपनी शिक्षा को दोषी नहीं ठहराता; इसके अलावा कुछ और बातें हैं जो हम तब तक नहीं सीख सकते जब हम जीवन के अनुभवों में सम्मिलित नहीं होते। ये कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं जिन्हें मैंने अपनी जिन्दगी में पाया। इन सिद्धान्तों का अनुसरण करने से आपकी सेवकाई प्रभावशाली होगी तथा आपको मज़बूती के साथ समाप्त करने में सहायता मिलेगी।

बुलाहट आपकों कठिन समयों में स्थिर बनाये रखेगी

यदि मेरे जीवन में अन्दरूनी आभास नहीं होता कि मैं परमेश्वर की इच्छा के केन्द्र में था, और हूँ, तो मैं अपनी सेवकाई के प्रथम दो वर्ष (तथा बाकी जीवन) निर्वाह नहीं कर सकता था। इस बात को निश्चय जाने कि आप जहाँ हैं और आप जिस लिए हैं वह एक अवसर है।

अपनी सामर्थ पर निर्माण करें

किसी जवान सेवक के लिए असुरक्षित महसूस करना स्वाभाविक है। उसकी असुरक्षा के कारण वह किसी बूढ़े व्यक्ति, सफल सेवक, या किसी दूसरे व्यक्ति के कार्य करने के तरीके की नकल कर सकता है। जिन बातों में आप अच्छे हैं उनमें तथा अपने वरदानों पर ध्यान दें। अपनी शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करें तथा जिन क्षेत्रों में आप अच्छे नहीं हैं उनके लिए लोगों को अपने साथ ले लें...

इतनी मज़बूत बुनियाद डालें, जो बाद में परमेश्वर के द्वारा आप पर डाले जाने वाले बोझ को सह सके

बड़ी व ऊँची इमारतों को गहरी बुनियाद की आवश्यता होती है। अपनी सेवकाई के प्रारम्भिक वर्षों में अपने आपको तैयार व अनुशासित करने के लिए समय अलग करें। बहुत से सेवक जीवन के बीच में ही हार मान गये, क्योंकि उन्होंने कभी टीका टिप्पणी तथा व्याख्या करने वाले गुण को, व्यक्तिगत प्रार्थना के जीवन को, या अध्ययन करने की आदत को विकसित नहीं किया। यह उदासीनता उनके व्यक्तिगत आत्मिक जीवन तथा उनकी मण्डली के आत्मिक भूखेपन का कारण हुई। सप्ताह में १५ से २० घण्टे अध्ययन करने के लिए स्वयं को अनुशासित करें।

आपकी शक्ति काफी नहीं हैं

जो आपकी शिक्षा, प्रशिक्षण, तथा वरदान निर्माण कर सकते हैं उसकी एक सीमा है; जिस काम में आप लगे हैं वह आपका नहीं; वरन परमेश्वर का कार्य है। जिस प्रकार से पौलुस बहुगुणी था, वह समझ गया कि 'हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन सामर्थ्य और पवित्र आत्मा और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है'' (१ थिस्सलुनिकियों १:५)। जब तक आप खुद परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर नहीं करते, आपकी कलीसिया और सेवकाई नहीं बड़ सकती।

चीजों की देखभाल करें

मेरी पासबानी के प्रथम वर्ष में, मैंने परमेश्वर को मुझसे चर्च के पास के नज़रअन्दाज़ हुए स्थान के बारे में बातें करते सुना, उसने मुझसे कहा यदि तुम बगीचे की देखभाल नहीं कर सकते, तो तुम लागों की देखभाल कैसे कर पाओगे? मैंने सप्ताह में एक दिन चर्च में कार्य करने के लिए नियुक्त किया तथा हमने नयी घाँस लगाई; ६ महीने के अन्दर कलीसिया १०० से ३०० तिगुनी हो गयी। क्या वह केवल एक बगीचा था? मेरे विचार से वह एक सिद्धान्त था। चीजों की देखभाल करो। परमेश्वर ने जो भी सुविधाऐं आपकों उपलब्द करायी हैं उनका ख्याल रखें। कार्यालय के लिए अलग समय निकालें, फोनों का जवाब दें, ई.मेल पर आयें पत्रों का जवाब दें। हर एक कार्य को निपुणता के साथ करें।

अपने दर्शन से बढ़कर लोगों से प्रेम करें

मेरे पासबानी के प्रथम वर्ष में, मैंने कलीसिया के लिए अपने दर्शन को इस कदर ऊँचा उठाने की महान गलती की कि मैं उस दर्शन को सफल बनाने के लिए लोगों को रौंदने को तैयार था। मैं अपने दर्शन को किसी भी कीमत पर पूरा करने के लिए बोर्ड तथा मण्डली को विभाजित करने के लिए तैयार था। सौभाग्य से आत्मा ने मेरे हृदय में चार शब्दों को बोला, 'जोर्ज, अपनी ज़ुबान पर लगाम दो।' परमेश्वर ने मुझे विभाजित करने वाले की बजाय एक मिलाप करने वाला बनने में सहायता की। जब आप लोगों से प्रेम करते हैं वह बदले में आपसे प्रेम करेंगे तथा आपके दर्शन में सहायक होंगे।

यदि अगुवाई में एकता नहीं है तो लोग विभाजित होंगे

मेरी पासबानी के प्रथम वर्ष में, केवल एक बार ऐसा हुआ जब मैंने एक बड़ा निर्णय लिया और कलीसिया की अगुवाई उस निर्णय में मेरे साथ नहीं थी। उस मुद्दे की माँग ऐसी थी कि मैंने एकता से बढ़कर सच्चाई को चुना। यदि आप बिना अगवों को सहमती के कोई निर्णय लेकर आगे बढ़ते हैं तो मण्डली में विभाजन ज़रूर होगा। यह भला है कि हम पहले उपवास व प्रार्थना के लिए समय निकालें तत्पश्चात् तीव्र गति से आगे बढ़ें।

राजा व राज्य को पहला दर्जा दें

मेरी पासबानी के ६ महीनों के दौरान कलीसिया की सदस्यता ७३ से ४९ हो गयी। एक कठिन व दुखद समय के पश्चात् परमेश्वर की आत्मा ने इन शब्दों को मेरे दिल में बोला। जोर्ज, मैं इस कलीसिया को तुम्हारे व्यक्तित्व पर बनाने में बिल्कुल इच्छुक नहीं हूँ। यह मेरे व्यक्तित्व पर खड़ी होनी चाहिये। मुझे और मेरे राज्य को प्रथम स्थान दो और मैं बाकी चीज़ों का ख्याल रखूँगा। उस क्षण के बाद से, मैंने बड़े ध्यान से कभी भी किसी चर्च के सदस्य, किसी कार्यकर्त्ता या कर्मचारी पर अपने व्यक्तित्व को थोपने का प्रयास नहीं किया। वह मेरी नहीं बल्कि उसकी कलीसिया थी। हमने यह भी सीखा कि परमेश्वर की महान आज्ञा को पूरा करने के लिए देना, हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिये। परमेश्वर मिशनरी का हृदय रखने वाले पासबान व कलीसिया को आशीष देगा।

आत्मिक स्त्रोत ने सेवकाई का यह नक्शा इसलिए मुहय्या करवाया है ताकि आप अपनी बुलाहट के मार्ग को पहचान सकें। मैं विश्वास करता हूँ कि आप इन लेखों का इस्तेमाल प्रभावशाली सेवकाई के लिए वर्तमान में करेंगे ताकि आप बड़ी मज़बूती से इस कार्य को पूरा कर सकें। ■

जार्ज डब्ल्यू वुड *D.Th.P स्प्रिंगफील्ड, मिसूरी के एसैम्बली ऑफ गॉड चर्च में, जरनल काउन्सल के सुपरिटेन्डेन्ट हैं।*